कम्प्रोमाइज

कम्प्रोमाइज

जगदीश प्रसाद मण्डल

ISBN : 978-93-80538-44-0

मूल्य : भा. रू. ५०/-

पहिल संस्करण : २०१२

ग्राम, पोस्ट : बेरमा, भाया : तमुरियाजिला : मधुबनी (बिहार)

श्रुतिप्रकाशन
रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- ११०००८.
दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११) २५८८९६५७
Website : http://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at : Ajay Arts, Delhi- ११०००२

Typeset by : Umesh Mandal.

Distributor :
Pallavi Distributors, Ward no- ६, Nirmali (Supaul),
मो. ९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२

COMPROMISE- Maithili Play by Jagdish Prasad Mandal.

पात्र परिचय

पुरुष पात्र-

(१) नसीवलाल-	किसानक अगुआ, ६५ बर्ख
(२) सुकदेव-	बटाइ किसान (बटेदार) ६४ बर्ख
(३) मनचन-	बटेदार, ४० बर्ख
(४) सोमन-	बटेदार, ४५ बर्ख
(५) रघुवीर-	तीमन-तरकारी उपजौनिहार, ४५ बर्ख
(६) रामरुप-	बटेदार, ४४ बर्ख
(७) कर्मदेव-	बी.ए. पास युवक
(८) प्रो. कृष्णदेव-	५०-५५ बर्ख
(९) दिनेश-	मैट्रिकक छात्र
(१०) शिवशंकर-	एजेंट (बोरिंग-दमकल)
(११) घनश्याम-	बैंक मैनेजर
(१२) बहादुर-	नौकर
(१३) मनमोहन-	इंजीनियर
(१४) संतोष-	एग्रीकल्चर ग्रेजुएट
(१५) डॉ. रघुनाथ-	सेवा निवृत डॉक्टर, ६० बर्ख

नारी पात्र-

(१) अनुराधा-	डॉ. रघुनाथक पत्नी, ५८ बर्ख
(२) सुधा-	कृष्णदेवक बेटी। हाइ स्कूलक छात्रा
(३) शान्ती-	पंचायत मुखिया, २५ बर्ख
(४) आभा-	शिक्षिका, २२ बर्ख
(५) सोनिया-	सुकदेवक पत्नी, ६० बर्ख

पहिल दृश्य

(आसिन मास। रौदियाह समए...)

सोनिया- अपनो नार सधिगेल। काल्हिमनोहर मामागामसँ आनए गेल। दुइयो-चारिबल्हीक ओरियान अपनो नै करब तँ माल-जालकेँ की खाइले देबै?

सुकदेव- मनमे तँ अपनो अछिमुदा छुच्छ हाथ थोड़े मुँहमे जाइ छै।

सोनिया- कोनो किअन्न नै खाइ छी जे नै बुझब। मगर दुआरपर जेकरा गरदनिमे डोरी बन्हने छिऐ तेकर निमरजाना केकरा करए पड़तै।

सुकदेव- (मुड़ी डोलबैत...) जेकरा पाइ छै उ आनो गामसँ कीनिआनत। मुदा....?

सोनिया- मुदा कहने समए मानत। कोनो ओरियान तँ करैये पड़त।

सुकदेव- (तरहथ्थीसँ आँखिमलैत...) ने एक्को मुट्ठी नार अछि, ने बाधमे घास अछिआ ने बाँसक पत्ता एक्कोटा हरिअर अछि। आन साल अधियोपर तोड़ै छलौं तैयो कहुना कऽ काज चला लइ छलौं। ऐबेर सेहो सभटा झड़किये गेल......। देखियौ किहोइ छै?

सोनिया- ताबे ओहिना ठाढ़े रहत। दुआरपर लक्ष्मी कलपने प्रतबाए केकर हेतै?

सुकदेव- गाममे ककरो देखबो कहाँ करै छिऐ जे दू मुट्ठी मांगियो लेब। जिनका सभकेँ बेसी होइतो छन्हिओ तँ अपने पाछू तबाह छथि। जेकरा छैहे नै ओ अपनो पतिनै बचा सकैए तँ दोसरकेँ की बचाओत। तहूमे दुइये-चारिदिनक बात रहैत तखैन ने। ऐबेर नै भेने अगिलो साल तेहने हएत।

सोनिया- छुच्छे सोग केने चिन्ता मेटाइ छै। जखैन दिने उनटा भऽ गेल तखैन सुनटा सोचने हएत।

सुकदेव- (बेबस...) की उपाए करब। जखैन समैये संग छोड़िदेलक तखैन जीबेक कत्ते भरोस करब।

सोनिया- ई अहींटा बुझै छिऐ किआउरो गोरे।

सुकदेव- की उपाए करब?

सोनिया- उपाए की करब! जेहेन समए बनल तेहेन बनिजाउ। तखने किछु पारो-घाट लागत। नै तँ......।

(सुकदेव सोनिया मुँह दिस, बघजर लागल जकाँ, टकटकी लगा तकैत सुकदेवक आँखि सोनिया पढ़ि...)चलु दुनू गोरे। मरहन्नाक जे बुट्टी-बाटी भेटत सेहो काटिलेब आ कतौ-कतौ जे चिचोर सभ छै सेहो काटिकऽ लऽ आनब।

सुकदेव- बेस कहलौं। जाबे बरतन ताबे बरतन। हाँसू नेने आउ। खोलियापर चुनौटी अछिसेहो नेने आएब।

(सोनिया जाइत। मनचनक प्रवेश...)

मनचन- भैया, जान बचाएब भारी भऽ गेल।

सुकदेव- से की?

मनचन- कलक पानि बन्न भऽ गेल। पानिये ने खसै छै।

सुकदेव- से की भेलह?

मनचन- पान-सात दिनसँ मटियाह पानिअबै छेलै। ओकरा जमा कऽ कहुना काज चलबै छलौं। काल्हिसँ ओहो बन्न भऽ गेल।

सुकदेव- दोसर कलसँ काज चलाबह?

मनचन- एहँ, कोनो किएक्केटा कल बन्न भेल। टोलक सभ बन्न भऽ गेल।

सुकदेव- तखैन पीबै की छह?

मनचन- पोखरिक पीबै छी। ओहो लटपटाएले अछि।

सुकदेव- बौआ किकरबहक। आखिर ऐ धरतीपर अपना सभ (मनुख) नै किछु करबहक तँ माल-जाल, चिड़ै-चुनमुनी बुत्ते हेतै। देखै नै छहक जे कते रंगक चिड़ै पड़ा गेल।

मनचन- भैया, तोरे सबहक मुँह देखिजिबै छी। सबहक गतिएक्के देखै छी। तामसो केकरापर करब। ऐ देहक कोनो ठेकान अछि। ने देहक ठेकान अछिआ ने देखिनिहारक ठेकान। तखैन तँ जाबे

हाथ-पएर घिसिआइए घिसिअबै छी।

सुकदेव- अखन जाह। निचेनमे कखनो गप करब। दू मुट्ठी मालक ओरियान करए जाइ छी। देखहक जे आसिन मास जकाँ एक्कोरत्ती लगै छै। अखुनका ओससँ खढ़-पातक डगडगी रहैत से केहेन उखड़ाह लगै छै।

मनचन- ऐसँ नीक ते जेठमे छेलै। जेठोसँ खरहर समए लगै छै। एकटा बात मन पड़ल।

सुकदेव- की?

मनचन- ऐसँ पैछला रौदी नमहर रहै किछोट?

सुकदेव- तोरा की बूझिपड़ै छह?

मनचन- नमहर बूझिपड़ैए।

सुकदेव- ओ चारिसालक भेल रहए। एकरा तँ सालो नै लगलै।

मनचन- हमरा नमहर बूझिपड़ैए।

सुकदेव- दिन बीतने लोक दुखो बिसरिजाइ छै। तोरो सएह भेलह।

मनचन- नै भैया, से नै भेल। विधने मोटका कलमसँ लिख देने छथितँए ने मन रहैए।

(मुस्की दैत...)मुदा एकटा बात कहै छिअह।

सुकदेव- की?

मनचन- हम सभ तँ जानिये कऽ गरीब छी तँए बुड़िबक छी। मुदा जेकरो महिक्का कलमसँ लिखलखिन ओहो तँ कोंकिआइते अछि।

सुकदेव- अखन जाह। काजक बेर उनहिजाएत। एकटा बात मन राखिहह। पछुलका शताब्दीमे पच्चीसटा रौदी भेलै। एक सालक रौदी लोककेँ चारिबर्ख पाछू ठेलै छै।

(दूटा हाँसू नेने सोनियाक प्रवेश...)

सुकदेव- (स्वयं...) कतऽ गेल पचास बर्खक जिनगी। पानिक दुआरे कोसी नहरिआ शक्तिक दुआरे पनिबिजली। जँ बनल रहैत तँ की औझके जकाँ मिथिलांचल वासीकेँ पड़ाइन लगितै। चिड़ै जकाँ

उड़ैत-उड़ैत लोक चिड़ै बनिगेल। चिड़ै बनने मनुख-मनुख कहबैक जोग रहत। जेकरा अपन बाप-दादाक बनाओल सुन्दर गाम-घर छै ओ घर छोड़िघुरमुरिया खेलाइए। खाइर.....।

(सोनियाकेँ देखि...) तमाकुल अनलौं कि ओहो सठिगेल?

सोनिया- (मुँह चमका...) सुआइत लोक कहै छै डोरी जरिगेल ऐंठन नै गेल। पेटक ओरियान रहै किनै रहै मुदा मुँहमे सुपारी चाहबे करी।

सुकदेव- सुपारीक मर्यादा की छै से अहीं बुझबै। सुपारी खेनाइक अंग छी जे खेलोपरान्त अतिथिअभ्यागतकेँ विदाइ स्वरुप देल जाइ छै। सुपारीयो जोकर मान-मर्यादा जइ पुरुखमे नै रहल ओहो पुरुखे भेल। हिजरोसँ बत्तर अछि।

सोनिया- बुझलौं, बुझलौं साँप फूसलबैक मनतर। (विचार बदलैत) एकटा बात पुछौं?

सुकदेव- एकटा किअए। एक हजार पूछू।

सोनिया- पेटक आशामे पेट काटिभरै छी आ घर अनैकाल टुटरूम-टुम भऽ जाइए। छोड़िदिऔ बटाइ खेती?

(सोनियाक विचार सुनि सुकदेव ऊपर-सँ-निच्चाँ धरिसोनियाकेँ निहारिनजरिचेहरापर अँटका, अपन पैछलाजिनगीपर दौगबैत, अएना जकाँ देखए लगल। तड़पतिमने...)

सुकदेव- जखैन अपना धन-वित्त नै अछितखैन....?

सोनिया- तखैन की?

सुकदेव- बटाइयो खेती केने अपन जिनगी तँ ठाढ़ केने छी। मारिधुसिखटै छी, भरिपेट आकिआधा पेट खाइ तँ छी। जँ इहो छोड़िदेब तँ किगोबर-गोइठा जकाँ कतौ पड़ल रहब।

सोनिया- बड़ीटा दुनियाँ छै। जतऽ पेट भरत ततऽ देह धुनि जिनगी बिताएब।

सुकदेव- ई तँ बुझै छी जे हाथ-पएर लारने कतौ पेट भरत। मुदा जे फुलबारी (गाम) बाप-दादाक लगाओल अछि, मनुक्ख जकाँ

मनुक्ख बनिजिबैत एलौं, तेकरा छोड़ि.....?

सोनिया- की आनठाम मनुक्ख नै रहै छै?

सुकदेव- हँ रहै छै। मुदा मनुक्ख मनुक्ख आ समाज समाजक बीच भुताहिगाछी, मरुभूमिपहाड़, समुद्र सदृश भाषा, काज बेवहारसँ जिनगी बदलिबदलिगेल अछि। जइसँ एते खाधिमनुख-मनुखक बीच बनिगेल अछि। जइसँ कियो ककरो देखौ नै चाहैए। एहेन स्थितिमे.....।

सोनिया- कोनो किखुटा गाड़िसभदिन रहब जे अनेरे एत्ते माथा धूनिदेहक हड्डी झकझकबै छी। बुझिते तँ छिऐ जे घरवाली घर लेती दाइ जेती छुच्छे।

सुकदेव- बाप-दादाक फुलवाड़ी ओ नै छियनि जे मात्र समैया फूलक होय। बाप-दादाक फुलवाड़ी ओ छियनिजइमे फूलक गाछक जड़िमे कुण्डली राखल अछि।

पटाक्षेप

दोसर दृश्य

(सुकदेव सोमन ऐठाम जाइत बाटमे...)

सुकदेव- (उत्तेजित...) पचास बर्खसँ किसान-बोनिहारक संग मिलिकोसी नहरिक पानिसँ खेतिओ आ बिजलियोक सपना पूरा हएत तइ आशामे रहलौं। मुदा आइ किदेखै छी? घरमे अन्न नै खेतमे पानिनै मशीनक नामो-निशान नै। यएह सोराज (स्वराज) साठिबर्खक छी। की हमसभ टकटकी लगौने मरिजाय। मुदा ऐ उमेरमे कएले की हएत? भगवान बुढ़ाड़ी दैते किअए छथिन। जँ दइ छथिन तँ जिबैक जोगार किअए ने कए दइ छथिन। की टकटकी लगा आँखिपथरा परान तियागिदी। उसैर रहल अछिगामक चास-बास, उसरिरहल अछिपशुधन, उसरिरहल अछिगामक खेत-खरिहान, उसरिरहल अछिगामक कला-संस्कृति।

(सोमनक घर। आंगनसँ निकलिसोमन देह खोलने कन्हापर धोती नेने नहाइले विदा भेल...)

सोमन- सबेरे-सबेरे केम्हर-केम्हर भैया?

सुकदेव- एलौं तँ तोरेसँ किछु विचार करए मुदा तोरा देखै छिअ जे कतौ जाइक सुर-सार करै छह।

सोमन- हँ भैया, कनी हाटपर जाएब। तँए धड़फड़ करै छी। मुदा जखैन आबिगेलह तँ किछु इशारोमे कहिदाए। जखैन भेँट भऽ गेलियह तखैन चुपे-चाप चलियो कन्ना जेबह?

सुकदेव- गप तँ गप छी, दोसरो घड़ी हएत। मुदा काजमे बाधा भेने तँ काज मारल जाएत। काज मरने जिनगी मरै छै। एक तँ समये तेहन दुरकाल भऽ गेल जे ओहिना सभ पटपटाइए। तहूपर जँ जोगारो बाधित हएत तखैन तँ आरो तबाही बढ़त।

सोमन- गप जे कहिदेने रहबह तँ रस्तो-पेरा सोचैत-विचारैत रहब। ओमहरसँ (हाट) घुरब तँ भेँट केने एबह।

सुकदेव- गप तँ नमहर अछि। मुदा तोरो बेर परक भदबा बनब नीक नै। अच्छा साँझमे भेँट हेबह किने?

सोमन- हाट जाएब अनठाइयो दैतिऐ। मुदा आइ सोमक हाट छी। कहैले तँ दूटा हाट लगै छै मुदा सोमक हाटक मोकाबला बरसपतिक हाट करतै।

सुकदेव- से की?

सोमन- सोमक हाटमे सीतामढ़ीक बेपारीसँ लऽ कऽ सुपौल फारविस गंज धरिक बेपारी अबै छै। छअ दिन ओकरा सभकेँ अबै जाइमे लगै छै। तहूमे गाए-बड़दक पएरे एनाइ-गेनाइ सेहो रहै छै।

सुकदेव- हँ, से तँ लगिते हेतै। तैओ ओही बेपारी सभकेँ धैनवाद दिऐ जे एते मेहनत करैए।

सोमन- अनठौने नै बनत भैया। बहरबैया बेपारी सभ मुइल-टुटल सभ उठा लइए।

सुकदेव- केहेन कारोबार ओकरा सबहक छै जे मुइल-टुटल सभ कीनिलइए?

सोमन- छिहे औगताएल भाय-सहाएब, नै तँ सभ बात बुझा देतौं। एको मुट्ठी नार-पात नै रहने देहमे कछमछी लागल अछि। खढ़-पानिले जे हुकड़ैत देखै दिऐ तँ मन घोर-मट्ठा भऽ जाइए। ओना......?

सुकदेव- की ओना?

सोमन- बेर परक बात बजने बेसी नीक होइ छै। खाइर, कनी देरिये ने हएत। ओत्ते लफड़िकऽ चलिपुरा लेब। अपना गाममे हाटे ने होइए, नै तँ जिबैक एकटा बाट लोककेँ खुजिजइतै।

सुकदेव- हँ, से तँ होइतै। तोरो देरी हेतह।

सोमन- की करब भैया, चारू दिससँ घेरा गेल छी। तेहेन समए भऽ गेल अछिजे अपनो सबहक जान बचब कठिन भऽ गेलहेँ।(दू डेग आगू बढ़ैत सुकदेव...)

सुकदेव- कनी-मनी पूँजियो तोड़िकऽ पहिने मनुक्खक जान बचाबह। बादमे बुझल जेतै।

सोमन- जाबे साँस अछिताबे तँ आशामे हाथ-पएर लाड़बे-चाड़बे करब। अजगरो तँ अपन जिनगीक ओरियान करिते अछि।

पटाक्षेप

क्रमश:

तेसर दृश्य

(मवेशी हाट। माल-जालक संग अन्नो-पानिआ तीमनो-तरकारी...)

(सोमन आ रामरुप...)

रामरुप- गोधियाँ, मालक मंदी आबिगेल अछि। दोसर कोनो बाटे नै सुझल तँए कनी घटो लगा कऽ बेच लेलौं। तोहर केहेन रहलह?

सोमन- (मुस्कुराइत...) सुतड़ल गोधियाँ। सुपौलिया बेपारी पकड़ाएल। अपन मन तँ झुझुआइते छलए। पौरुके तीन हजारमे बड़द कीनने छलौं। लार-पातक दुआरे अधो देह नै छलै। मनमे छलए जे पाँच बरख मारिधूसिजोतबो करब आ तेकर बादो बेचब तैयो दाम आबिये जाएत मुदा की करितौं खुट्टा उसरन भऽ गेल।

रामरुप- अही दुआरे हमहूँ बेच लेलौं। तेहेन धन छलए जे मनसँ नै जाइ छलए मुदा रखबो करितौं तँ खाइले की दैतिऐ? महीना दिनसँ कपैच-कुपैच कऽ खाइले दइ छेलिऐ। मुदा परसू आबिकऽ ओहो सधि गेल। गठुला घर उछेहलौं जे दू दिन चलल।

सोमन- घर उछेह खुआ लेलह तँ फेर घर?

रामरुप- खुट्टापर जेकरा बान्हिकऽ रखने छेलिऐ ओकरा जे अधो पेट खाइले नै दैतिऐ से केहेन होइत। जखने थैरमे जाइ छलौं आकिहुकड़ए लगै छलए। ओकर कलपतिमन देखिअपनो मन कलैप जाइ छलए। तँए सोचलौं जे बरसात तँ अगिला साल आओत, बुझल जेतै।

सोमन- (मुड़ी डोलबैत...) हँ से तँ ठीके। जैठीन एक दिन पार लगनाइ कठिन अछितैठीन साल भरिआगूक सोचब बूड़िबक्कियै ने हएत।

रामरुप- आब तँ गामे चलबह किने?

सोमन- हँ। चलब तँ गामे मुदा एकटा काज पछुआएल अछि। चलह एक फेरा लगाइयो लेब आ आधमन चाउरो कीनिलेब।

रामरुप- मन तँ हमरो होइए। मुदा मालक पएरे एलौं से थाकिगेलौं।

मोटरी उठबैक साहसे नै होइए।

सोमन- यएह हद करै छह तहूँ। चलह ने कोनो दोकानपर बैस जलखैइयो-चाह करब आ दस मिनट जिराइयो लेब। बुझै छहक जे कहुना पाँच रूपैया किलो सस्ता भेटतह।

(चाहक दोकान। बेंचपर चाउरक मोटरी रखिरघुवीर सेहो बैसल...)

रामरुप- कनी मोटरी घुसका लिअ। की छी मोटरीमे भाय?

रघुवीर- की रहत। चाउर छी। आब कि कोनो भात खाइ छी किदिन घीचै छी।

रामरुप- से की?

रघुवीर- अपना सबहक जे अगहनी चाउरक सुआद आ मस्ती छै से थोड़े ऐ चाउरमे छै। तखैन तँ अपन हारल......।

रामरुप- की भा देलक?

रघुवीर- तँए, कनी मन मानलक। अगहनी चाउरसँ पाँच रूपैया सस्ता अछि।

रामरुप- तब तँ गोधियाँ अपनो सभ अध-अध मन कऽ लऽ लेब, से नीके?

सोमन- हमहूँ तँ यएह सोचिकऽ कहलियह। अखन जदी कनी भीरे हएत तँ तीन दिनक सिदहामे चारिदिन कटिजाएत।

रामरुप- हम सभ पछुआएल छी तइ बीच सठतै तँ ने भाय?

रघुवीर- से किअद्दी-गुद्दी बेपारी छी। पाँच गो ट्रक भिड़ौने अछि। मुदा खड़तुआ जकाँ लेबालो ढेरिआएल अछि।

रामरुप- (मोटरी दिस देखि...) तरजू देखै छी। अहूँ कोनो चीज बेचैले आएल छलौं?

रघुवीर- हँ। तरकारी उपजेबौ करै छी आ हाटमे बेचबो करै छी। भगवान दसे कट्ठा खेत देने छथि। ओकरे बीचमे कल गरा देने छिऐ आ बारहो मास तरकारीये उपजबै छी।

रामरुप- सभ किछु बिक जाइए?

रघुवीर- (कनी ठमकि...) हँ बिक तँ जाइए मुदा.....?

रामरुप- मुदा की?

रघुवीर- यएह जे तेहेन चिक्कनिया लेबाल सभ भऽ गेल अछिजे चीज चिन्हबे ने करैए।

रामरुप- से की?

रघुवीर- की कहब। लहटगर देखिचीज कीनैए। कीड़ी-फतिंगीक बेसी दवाइ हम नै दइ छिऐ। तइसँ देखैमे समान कनी दब रहैए।

रामरुप- अहाँ किअए नै दवाइ दइ छिऐ?

रघुवीर- अपनो खाइ छी किने। देखैमे ने दवाइ देल नीक लगैए मुदा जहरक अंश ओइमे रहिये जाइ छै किने। मुदा भगवान हमरो दिस देखै छथि?

रामरुप- से की?

रघुवीर- अखनो एहेन कीनिनिहार छथिजे हमरे चीजकँ पसिन्न करै छथि। दू-पाइ महगे बिकाइए। अहाँ सभ कतऽ आएल छलौं?

रामरुप- (मिड़मिरा कऽ...) की कहब भाय, रौदीक मारल डिरिआइ छी। बड़द-गाए बेचए आएल छलौं। खुट्टा उसरन भऽ गेल।

रघुवीर- (मुड़ी डोलबैत...) दोसर उपाइये किअछि। तेहेन दुरकाल समए भऽ गेल अछिजे लोकोक प्राण बँचब कठिन भऽ गेल अछितइठीम माले-जाल गेल किने। पहिने मनुक्खक जान बचाउ। तखैन बुझल जेतै।

रामरुप- अहाँ तँ हाटक तरी-घटी बुझैत हेबै। कहू जे एते-एते दूरसँ जे बेपारी सभ अबैए, से कना पार लगै छै?

रघुवीर- एकरा सबहक भाँज बड़ भारी छै। बड़का-बड़का बेपारी सभ छी। चरिचरि, पॅच-पॅच बएच बनौने अछि। गामसँ हाट आ हाटसँ गाम एक बट्ट केने रहए। अड़डा बना-बना कारोबार पसारने अछि।

रामरुप- एकरा सभले रौदी-दाही नहिये छै?

रघुवीर- (अचंभित होइत...) रौदी-दाही! हद करै छी अहूँ। सदिखन घैलापर पाइ चढ़ौने रहैए। जेना अपना सभले रौदी-दाही जनमारा छी तेना एकरा सबहक अगहन छी। एक बेर रौदी-दाही पाओने सेठ बनिजाइए।

पटाक्षेप

चारिम दृश्य

(नसीवलालक घर। दरबज्जाक ओसारक कुरसीपर बैस नसीवलाल आँखिमूनिकिछु सोचैत। सोमनक संग सुकदेव अबैत...)

सुकदेव- नीन छी यौ भाय?

. (सुकदेवक बात सुनिआँखिखोलिधड़फड़ाइत...)

नवीसवलाल- नै! नै! सुतल कहाँ छी। समैक फेरीसँ चिन्तित भऽ गेल छी। खेलहो अन्न देहमे नै लगैए। एक दिस जहिना भूख पियास मेटा गेल तहिना आँखिक नीन्न सेहो। धैनवाद अहीं सभकेँ दी जे एहनो दुरकालमे हँसी-खुशीसँ जिबै छी।

सोमन- हद करै छी भाय! राँड़ कानए अहिवाती कानए तइ लागल बरकुमारिकानए।

नसीवलाल- तोहर बात कटैबला नहिये छह सोमन मुदा......?

सोमन- मुदा की?

नसीवलाल- ओना, जे जत्ते पछुआएल अछिओ ओत्ते समस्यासँ गरसित अछि। मुदा प्रकृतक विपतिसभपर पड़ै छै। तहूमे जे जत्ते अगुआएल रहैए ओकरा ओत्ते बेसी पड़ै छै।

सोमन- हँ, से तँ पड़िते छै।

नसीवलाल- बौआ, ओना तोहर उमेरो कते भेलह। एक गाममे रहितो कम सम्पर्कमे रहै छह। सुकदेव भाय बतरिया छथि। तहूमे बच्चेसँ दुनू गोरे गामसँ जहल तक संगे रहलौं। मुदा.....?

सोमन- मुदा की?

नसीवलाल- यएह जे आब बूझिपड़ैए जे जिनगिये ठका गेल।

सोमन- से की?

नसीवलाल- की कहबह आ कते कहबह। एकटा कोसिये नहरिक बात सुनह। जहिया जुआने रही तहियेसँ कहै छिअह। बड़ लिलसा

रहए जे कोसी नहरिबनत। डैम बनतै। नहरिक पानिसँ खेत पटत आ डैममे पनिबिजलीक यंत्र बैसतै। जइसँ तते बिजली हएत जे घर-दुआरक इजोतक संग करखन्नो चलत। मुदा सभ आशापर पानिहरा गेल। आइ जौं बिजली रहैत तँ गामो बजारे जकाँ भऽ गेल रहैत। मुदा......?

सोमन- मुदा की?

नसीवलाल- यएह जे ई बात मनसँ मेटा गेल छलए जे एहेन रौदीसँ भेँट हएत। मुदा.....!

सोमन- मुदा की?

नसीवलाल- अपन संग-संग गामोक कल्याण भऽ जाइत। खेती-पथारीक संग एते छोट-पैघ करखन्ना बनिगेल रहैत जे बेरोजगार केकरा कहै छै से तकनौसँ नै भेटैत। मुदा आइ देखै छी जे गाम-गामक लोक उजहिकऽ दिल्ली, कलकत्ताक संग जहाँ-तहाँ पड़ा रहल अछि।

सोमन- हँ। से तँ भऽ रहल अछि। मुदा माटियो फाँकिकऽ तँ मनुख नहिये रहिसकैए। जतऽ पेट भरतै ततऽ ने जाएत।

नसीवलाल- कहलह तँ बेस बात। मुदा गाम ताबे नै हरियाएत जाबे गामक बच्चा-बच्चा ठाढ़ भऽ अपन भविस दिस नै ताकत।

सोमन- एहेन समए भेने लोक केना ठाढ़ हएत?

नसीवलाल- सएह ने मनकेँ नचा रहल अछि। सभ माए-बाप बेटा-बेटीपर आशा लगौने रहैए जे हमरासँ नीक बनिधिया-पुता गुजरो करत आ नीक जकाँ आगूओ बढ़त। मुदा आँखिउठा दुनियाँ दिस तकै छी तँ चौन्ह आबिजाइए। बाल-बच्चाक कोन गप जे अपने बुढ़ाड़ी भरिसक कनिते कटत।

सुकदेव- वएह बात मनमे औंढ़ मारलक भाय, तँए एलौंहेँ।

नसीवलाल- भाय, किविचार करब। छुच्छ हाथ मुँहमे दइए कऽ की हएत। ने कियो गाम-घरक महौत बुझैए आ ने अपन शक्तिक उपयोग करए चाहैए। सभ अपन अमूल्य श्रम-मेहनत- दोसराक हाथे बेच बजारक चकचकीमे बौआइ-ए।

सुकदेव- यएह सभ देखिने मन उच्छटिगेलहेँ। मुदा केकरा कहबै, के सुनत। अहाँ तँ गुल्ली-डंटासँ अखैनधरिक संगी छी। जे तित-मीठ भेल तइमे तँ दुनू गोरे संगे छी।

नसीवलाल- (चानिपरक पसेना पोछैत...) जहिना माटिक ईंटाकेँ वएह माटिपानिक संग मिलिजोड़िसाटिदैत अछितहिना ने मनुक्खोकेँ सिनेह साटिदैत अछि। मुदा सिनेह आओत केना? एक दिस धनक भरमार दोसर दिस भूखल पेट। तइ बीच चोर-उचक्काक सघन बोन। केना लोकक परान बँचतै?

सुकदेव- सोझे चिन्ते केनौ तँ नहिये हएत। ने भागलासँ हएत। सोचिविचारिरास्ता धड़ए पड़त। जँ से नै करब तँ एक लोटा पानिआ एकटा काठियो मुइलापर के देत?

नसीवलाल- भाय, जहिया घोड़दौड़ करैबला छलौं तहिया तँ करबे ने केलौं, आब ऐ बुढ़ाड़ीमे की हएत? किछु करए लगै छी तँ हाथ-पएर थरथराए लगैए। जइसँ बुझलो काजमे धकचुका जाइ छी।

सुकदेव- भाय, असे तँ जिनगीक संगी छी। जइ संग लोक जिनगीक रस चुसैत अछि। तेकरो छोड़िदेब......?

नसीवलाल- (सुकदेवपर आँखि गरा मुड़ी डोलबैत...) भाय कहै तँ छी लाख टकाक गप। अपनो जोकर नै सोच-विचार करब तँ अकाल मरबो तँ नीक नहिये छी।

सुकदेव- नीक अधला कतऽ छै भाय! भलहिं लोक अपना जिनगीकेँ स्वार्थी बुझे मुदा जाबे धरिअपने निरोग नै रहब ताबे धरिदोसराक विषयमे किसोचिआ कीकऽ सकै छी।

नसीवलाल- हँ, से तँ ठीके। विचारोकेँ प्रभावित तँ जिनगिये करैत अछि। नीक-नीक भाषणे करब आ अपन चालिछुतहरक अछितँ ओइ भाषणक महौते की? जहिना विज्ञान सिद्धान्त-थियोरीक- संग बेवहारो-प्रेक्टिकलो- कऽ कऽ देखबैत अछितहिना ने नीतिशास्त्र सेहो अछि।

सुकदेव- अखन धरि यएह बूझिने जिबैत एलौं, मुदा.......?

नसीवलाल- हँ, समैक चक्र तँ प्रवल अछिये मुदा एहेन प्रबल तँ नै

अछिजेकरासँ सामना नै कएल जा सकैत अछि। जीता-जिनगी हारियो मानिलेब, ओहो तँ......?

सुकदेव- हँ, से तँ उचित नहिये अछि। मुदा समनो तँ.......?

नसीवलाल- हँ, कठिन अछि। मुदा लंका सन राक्षसक बीच हनुमान केना.......?

सुकदेव- हँ, तहिना।

नसीवलाल- (अपसोच करैत...) पाछू घुरितकै छी तँ बूझिपड़ैए जे जरूर चूक भेल। जना कोसी नहरिआ पनिबिजली लेल सामाजिक स्तरपर ठाढ़ भेलौं तेना व्यक्तिगत जीवनक बाट छूटिगेल।

सुकदेव- से की?

नसीवलाल- यएह जे जना मध्यम किसान छी। अपना खेत अछि। तेना ने खेतमे पानिक ओरियान केलौं आ ने परिवारो जोकर मशीन। जौं से केने रहितौं तँ भलहिं महग काज होइत मुदा जिबैक बाट जरूर धरौने रहैत।

सुकदेव- जखन चारिपएरबला हाथी चूकिजाइए तखैन तँ मनुख दुइये पएरबला अछि। जइ समए जे चूक भेल, आइ ने ओ समए बँचल अछिआ ने जिनगीक ओ अंश।

नसीवलाल- अखन धरितँ हाले-चालमे समए निकलिगेल। काजक गप तँ छुटिये गेल। किमहर आएल छलौं?

सुकदेव- भाय, अहाँसँ नुकाएल नहिये छी। अखन तक जे जिबैक आस बटाइ खेत अछिओ टूटिगेल। खेतबलाकेँ तँ खेत रहबे करै छन्हिमुदा बटेदारकेँ घरोक आँटा गील भऽ जाइ छै।

नसीवलाल- दुर्भाग्य अछिभाय।

सुकदेव- जेकरा सोन छै ओकरा पहिरनिहार नै छै आ जे पहिरनिहार अछिओकरा सोन नै छै।

नसीवलाल- से तँ अछिये। गामक बारह आना खेत नोकरिहाराक अछि। जे खेती नै करैत अछि। जखन किबारह आना लोक खेतीपर जिबैत अछि। मुदा कोन दुख एहेन छै जेकर दवाइ नै छै।

सुकदेव- भारी बनरफाँसमे पड़िगेल छी। अखन तकखेती छोड़ि दोसर लुरिनै सीखलौं। खांहिसो नै भेल। घरसँ बाहरो जाएब से कोन लुरिलऽ कऽ जाएब। भीख मांगिखाइसँ नीक अन्न-पानिबेतरे घरमे प्राण तियागिदेब हएत। अगदिगमे पड़िगेल छी।

नसीवलाल- अहूँसँ बेसी तँ अपने पड़िगेल छी। अहाँ तँ नै ऐ गाम ओइ गाम जा कऽ कमाइयो-खा सकै छी मुदा.....।

सुकदेव- यएह बात मनमे अहुरिया काटिरहल अछि। जहिना संग-मिलिएते दिन कटलौं तहिना आगूओ केना कटत, तेकर......?

नसीवलाल- कनितो जीब। सेहो नीक नहिये।

(कर्मदेव प्रवेश...)

नसीवलाल- भाय, मन तँ अखनो तेहेन हुड़कैए जे शेष जिनगी जहलेमे बिताएब मुदा बुढ़ाड़ी.....। नवतुरियामे समाजक प्रतिकोनो रूचिये नै अछि। रूचियो केना रहत। जहिना परचा पोस्टरमे परिवारक परिभाषा दैत अछितहिना समाजक कोन बात जे माइयो-बापकेँ परिवारसँ लोक अलगे बुझैए।

कर्मदेव- काका, हमहूँ सएह पुछए एलौं जे एहेन समैमे घरसँ बिना भगने केना जीब?

नसीवलाल- बौआ, तोरे सभपर समाजक दारो-मदार अछि। मुदा जखन तोंही सभ चिड़ै जकाँ उड़िपड़ा रहल छह तखैन तँ समाजक-गामक-भगवाने मालिक।

सोमन- केकरापर करब सिंगार पिया मोरा आन्हर हे।

कर्मदेव- काका, जँ जिबैक बाट भेट जाएत तँ किअए भागब?

नसीवलाल- बौआ, तूँ तँ पढ़ल-लिखल नौजवान छह। तोरामे एते शक्तिछह जे किछु कऽ सकै छह। शक्तिजगाबह।

कर्मदेव- अखुनका समैसँ जे अपन तुलना करै छी तँ बूझिपड़ैए जे कारी मेघ लटकल भादोक अमवसियाक बारह बजे रातिक बीच पड़ल छी।

नसीवलाल- पढ़िलिखकऽ एते निराश किअए छह?

कर्मदेव- बूझिपड़ैए जे एहेन पढ़ाइ पढ़िलेलौं जे ने घरक रहलौं आ ने घाटक।

नसीवलाल- ओना जिबैक बाट व्यक्तिविशेष सेहो बनबैए आ बना सकैए। मुदा समाजकेँ बनने बिना जेहेन हेबाक चाही से नै बनिसकैए। तँए बेगरता अछिजे दुनू संग-संग बनए। जइले तोरे सन-सन नवयुवक अपेक्षा अछि। फाँड़ बान्हिमैदानमे कुदए पड़तह।

कर्मदेव- कियो तँ काजे देखिने फाँड़ बान्हत?

नसीवलाल- (अर्द्ध हँसी हँसि...) ऐले समाजकेँ जगबए पड़तह। जखने समाज नीन तोड़िसुनत तखने ओछाइन समेटिघरसँ बहरा रस्तापर आबिठाढ़ भऽ जाएत। जखने ठाढ़ हएत तखने नव सूर्जक रोशनीमे अतीतक गौरव देखत।

कर्मदेव- की गौरव?

नसीवलाल- मिथिला दर्शनक गौरव देखैक लेल ओकर बनैक प्रक्रिया देखए पड़तह। संयुक्त परिवार बजनहिनै, बनैक आ चलैक ढंग घड़ए पड़तह। जहिना कोनो बाट कोनो स्थान धरिपहुँचबैत तहिना मिथिला दर्शन छी।

कर्मदेव- की दर्शन?

नसीवलाल- एते धड़फड़मे नै बूझिसकबहक। अखन हमहूँ औगताएल छी। मालो-चालकेँ पानिनै पियेलौंहेँ, हुकड़ैए।

कर्मदेव- तखैन?

नसीवलाल- सौंसे समाजक बैसार ब्रह्मस्थानमे करह। सबहक विचारसँ एकटा रास्ता ताकिआगू डेग उठाबह।

कर्मदेव- आइये बैसार करब।

नसीवलाल- एते अगुतेने काज नै चलतह। कौल्हुका समए बना काने-कान सभकेँ जना दहुन।

कर्मदेव- बेस।

पटाक्षेप।

पाँचम दृश्य

(बेरक समए। परतीपर बैसार...)

सुकदेव- (उठिकऽ...) भाए-बहिन लोकनि, जत्ते दिन अपना सबहक अजादीक भेल ओतेक उमेर हमरो भेल। किएक तँ कोसी नहरिलेल नसीवलाल भाइक संग सरकारी ऑफिसमे करीब पचास बर्खसँ धरना, प्रदर्शन सभाक संग जहलो जाइत-अबैत रहलौं। जे रौदी बिसरए लागल छलौं आ आशा एते जगिगेल छल जे रौदीसँ भेँट नै हएत। मुदा ऐबेरक रौदी सिखा रहल अछिजे सभ केलहा पानिमे चलिगेल। जहिना सबहक जान अवग्रहमे पड़ल अछितहिना तँ अपनो भऽ गेल अछि।

सोमन- (बैसले-बैसल...) करबो तँ पानिये ले ने केलौं। पानिले केलहा पानिमे गेल।

नसीवलाल- (ठाढ़ भऽ...) लंगोटिया संगी सुकदेव भाय छथि। बच्चेसँ दुनू गोरे संगे रहलौं। दुनू गोटेक बीच अंतर एतबे अछिजे हमरा अपन खेत अछिआ हुनका अपन नै छन्हि। मुदा करै छी दुनू गोटे खेतिये। अपना खेत रहितौ आशा-आसीमे रहिगेलौं। तइ बीच जिनगीससरिगेल।

सोमन- एक दिस नहरिखुनाइ होइए आ दोसर दिस ढहिढहिभरैए। बीचमे सरकार मदारी-नॉच पसारने अछि।

नसीवलाल- खेतीले पानिओहन जरूरी अछिजेहने मनुक्ख आ माल-जाल ले। बिना पानिये खेती भइये नै सकैए। जइ हिसावसँ नहरिखुनाइ शुरू भेल जौं खुना गेल रहैत तँ अपना सभ बहुत अगुआ गेल रहितौं। मुदा की देखै छी?

कर्मदेव- कनी फरिछा कऽ कहियौ काका?

नसीवलाल- (हँसैत...) बौआ गामक बात बड़ नमहर अछितँए ओत्ते नै कहिअपन बात बजै छी। दस बीघा जोत जमीन आ बाँकी गाछ बेख, खरहोरिइत्यादिमे बरदाएल अछि। बाहर मासक सालमे

तीनटा मौसम जाड़, गरमी, बरसात होइए। मौनसुनी बरखासँ बरसातमे काज चलैए। बाँकी सालक आठ मास (दू मौसम) ओहिना रहैए।

सोमन- गोटे-गोटे बेर झाँटो आ पथरो खसैए।

नसीवलाल- हँ, हँ, सेहो होइए। अपन देश मूलत: किसानक देश छी। खेती-पथारी मुख्य बेवसाय छी जे अदौ-सँ-अखन धरिचलिअबैत अछि। समैपर बरखा भेल तँ किसानक मन हरियाएल रहल नै तँ सालो भरिमरचुन्नी रहल। प्रश्न अछिपान खाएल मुँह मुस्कियाइत रहए। जइठीन लोक पानिक जोगार केने अछिओइठीन हरियरी अछि। उन्नतिक रास्ता पकड़िआगू मुँहेँ ससरिरहल अछि। खेतक बले रंग-बिरंगक करखन्नो ठाढ़ केने अछि। अपना सबहक जड़िये सुखाएल अछितँ ऊपर केना पोनगत?

कर्मदेव- समस्या तँ भारी अछि?

नसीवलाल- जुगक अनुकूल भारी नै अछि। किएक तँ आइ हम सभ ओइ जुगमे पहुँचिगेल छी जइ जुगमे एहेन-एहेन समस्या धिया-पुता खेल सदृश अछि। मुदा.......?

कर्मदेव- मुदा की?

नसीवलाल- मुदा यएह जे जेकरा हाथमे काज करैक भार छै ओकर नेते भंगठल छै। कोन काज केना हएत तइ दिस नजरिये नै छै। नजरिछै जे कोन-काज केना दुइर हएत तइ दिस।

कर्मदेव- तखैन की करब?

नसीवलाल- अखन बहुत बात बजैक समए नै अछि। जइ काज ले सभ एकठाम बैसलौं तइपर विचार करू। गामक लोक आ गामक सम्पतिमे केना संबंध स्थापित हएत तइपर विचार करू।

कर्मदेव- हम सभ तँ नवतुरिया छी नीक-नहाँतिनहिये बुझै छी तँए कनी अपने रस्ता बता दियौ?

नसीवलाल- अखन इतिहास-भूगोल देखैक काज नै अछि। अखन एतबे विचार करैक अछिजे गाममे जत्ते जमीन अछिआ जत्ते लोक छी

ओकर हिसाब बुझैक। बारह आना जमीन हुनकर छन्हिजे खेती छोड़िअन्तए जा नौकरी करै छथि। चारिआना गाममे रहनिहारकेँ छन्हि। हुनके सबहक जमीन लोक बटाइ कऽ कऽ कोनो धरानी जिबै छथि। तँए जरूरी अछिऐ खाधिकेँ भरैक। जाबे से नै हएत ताबे समस्या बनले रहल।(कहिबैस जाइत...)

कर्मदेव- बेरा-बेरी अपन-अपन विचार रखै जाइ जाउ?

सोमन- कहैले हमहूँ किसाने छी मुदा ने अपना खेत अछिआ ने हर-बड़द। जनेपर हरो कीनै छी आ अनके खेतमे खेतियो करै छी। जेना-तेना जिनगी घिसियबै छी। आगू-पाछूक बात सेहो नहिये बुझै छी। तँए अपने-लोकनिक जे विचार हएत ओइसँ बाहर हमहूँ नै रहब।(सोमन बैस जाइत। आभा उठिकऽ ठाढ़ होइत...)

आभा- (जोरसँ...) जँ देश अपन छी तँ देशक सम्पतियो अपन छी। जरुरत अछिसबहक-सुख-दुखमे सबहक भागीदारीक। जे गाममे रहिखेत जोतै छथिगामक खेत हुनका जिम्मा हेबाक चाही। जँ से नै हएत तँ जहिना मार-काटसँ इतिहास भरल अछितहिना नव पन्ना आरो जोड़ाएत?

शान्ती- आभा बहिनक बात कटैबला नहिये छन्हिकिएक तँ साले-साल पनरह अगस्तकेँ हमहूँ सभ स्वराजक झंडा फहराबै छी। मुदा की स्वराज अछि? समाजक सदस्यक संग सरकारक अंग सेहो छी तँए शान्तीसँ सभ काज करैत चलू। नसीवलाल कक्का आ सुकदेव कक्का जहिना उमेरगर छथितहिना अनुभवी। तँए जेना-जे विचार दथिहम सभ ओ करी।

सुकदेव- जेहने नवकवरिया आभा छथितेहने शान्ती। मुदा दुनूक विचार सुनिहृदए शान्त भऽ गेल। खुशीसँ मन भरिगेल। सबहक विचारसँ एकटा रास्ता तँइ हुअए। जेकरा मानिसभ आगू बढ़ी।

नसीवलाल- दौग-बड़हा करैबला उमेर तँ नहिये अछिमुदा मेहौता बड़द जकाँ संग-संग बहैले तैयारे छी। अखन गाममे पढ़ल-लिखल नौजवान कर्मदेव अछि। चाहब जे दौग-धूप करैक भार ओकरे देल जाए।

कर्मदेव- जँ समाज भार देताह तँ जहाँ धरिसकब इमानदारीसँ सम्हारब।

नसीवलाल- जत्ते नोकरिया छथिहुनकासँ सम्पर्क कऽ सभ बात कहियनु। समाजक निर्माण सभ मिलिकरब, सर्वोत्तम।

पटाक्षेप

छठम दृश्य

(कृष्णदेवक डेरा। सूर्यास्तक समए। पनरह बर्खक बेटा दिनेश आ तेरह बर्खक बेटी सुधा दरवज्जापर बैस परीक्षाक गप-सप्प करैत...)

सुधा- भायजी, अहाँ सबहक परीक्षा तँ लगिचा गेल?

दिनेश- हँ। अगिला महीना आठ तारीखसँ हएत।

सुधा- सुनै छी, ऐबेर चोरितोरिनै चलत?

दिनेश- चोरिबन्न भेनाइ ओत्ते असान अछिजे नै चलत। भलहिं सेन्टरपर नै होउ मुदा आरो जगह बन्न हएब असान अछि।

सुधा- (जिज्ञासासँ...) औरो ठाम होइ छै?

दिनेश- होइ छै भेला जकाँ खूब होइ छै। जएह भोजैतनी सहए चटैतनी। जेकरे ऊपर चोरिरोकैक भार छै सएह सभ करैए। जेकरे फलाफल छी जे नीक विद्यार्थीक रिजल्ट अधला होइ छै। आ अधला विद्यार्थीक रिजल्ट नीक होइ छै।

सुधा- से एना किअए होइ छै?

(कृष्णदेवक प्रवेश...)

दिनेश- हम तँ सभ बात बुझबो ने करै छी पापाकेँ सभ बुझल हेतनि।

सुधा- पापा, परीक्षामे चोरिकतऽ-कतऽ होइ छै?

कृष्णदेव- बुच्ची, ओना पुछलह तँ कहबे करबह। मुदा अधला गप सुनैमे समए नहिये लगाबी, सएह नीक।

सुधा- जँ अधला गप नै सुनब तँ फेर नीक-अधला बुझबै केना?

कृष्णदेव- (मुस्की दैत...) कहलह तँ ठीके। देखहक ओना लोक परीक्षाकेन्द्रपर जे किताब-चिट-पुरजी लऽ कऽ लिखैए ततबे बुझै छै। मुदा ऐ सभसँ नमहर-नमहर चोरि दोसर होइए। जखन कापी एकत्रिक भऽ परीक्षक ओइठाम पठौल जाइ छै तखैन कापी बदलिबदलिलेल जाइए।

सुधा- नै बुझलिऐ। कनी नीक जकाँ फरिछा कऽ कहियौ?

कृष्णदेव- परीक्षाभवनसँ बाहर काँपी लिखाइत अछिआ जमा करैकाल बदलिलेल जाइत अछि।

सुधा- (आश्चर्यसँ...) तखैन तँ ओकरा बहुत नम्बर अबैत हेतै?

कृष्णदेव- अबिते अछि। कोनो किएतबे होइए। एकर उपरान्तो जइठीम काँपी जमा होइए आ मार्क-सीट तैयार होइए असली करामात तइठीन होइए। बनियाँक कारोबार जकाँ रूपैयाक बरखा होइए।

सुधा- तखैन तँ रूपैयेबलाक विद्यार्थीक रिजल्ट नीक होइत हेतै?

कृष्णदवे- होइते अछि।

(कर्मदेवक प्रवेश...)

कर्मदेव- गोड़ लगै छी कक्का।

कृष्णदेव- नीके रहह। गाम-घरक की हाल-चाल छह?

(भीतरसँ कृष्णदेवक पत्नीक अबाज- गौआँ-घरूआ दुआरे रहब कठिन भऽ गेल। ककरो असपतालक काज होउ, आकिकोट-कचहरीक दौगल चलिआएत। जना सबहक तोरा एतै गारल होइ।कान घुमा कर्मदेव सुनिग्लानिसँ भरिगेल। मुदा समाजक प्रतिनिधिबूझिसभ सहैक लेल तैयार...)

कर्मदेव- काका, आइ धरिएहेन रौदी नै देखने छलौं। ओना उमेरे कते अछिमुदा जहियासँ गियान-परान भेल तहियासँ एहेन समैसँ भेँट नै भेल छलए।

कृष्णदेव- (सुधासँ...) बुच्ची कर्मदेव भाय एलखुन। चाह नेने आबह।

(दुनू भाए-बहिन जाइत अछि...)

कर्मदेव- अपना दिसक किहाल-चाल अछि?

कृष्णदेव- नीक नहिये कहक चाही। तखैन तँ कौबलाक छागर बनल छी। कखनो काल सोचए लगै छी तँ लाज हुअए लगैए जे एते दरमाहा पावियो कऽ पेंइच-उधार करए पड़ैए।

कर्मदेव- किअए?

कृष्णदेव- छअ-छअ मासक दरमाहा पछुआ जाइए। मुदा घरक खर्च तँ हेबे करैए। एते दिन मकानक पाछू तबाह छलौं मुदा पैछला महिना निवृत्तिभेलौं।

कर्मदेव- बड़का चिन्ता पार केलौं।

कृष्णदेव- की पार केलौं। आगू दिस तकै छी तँ ओहूसँ नमहर-नमहर चिन्ता घेरने अछि।

कर्मदेव- से की?

कृष्णदेव- दू बर्खक बाद बेटाकेँ मेडीकलमे नाओं लिखाएब तइपरसँ बेटी सेहो बिआहे जोकर भइये जाएत।

कर्मदेव- हँ, से तँ हेबे करत।

कृष्णदेव- पढ़ौनाइ-लिखौनाइ आब हल्लुक रहल। लाखक तँ कोनो मोजरे नै छै। अपन कमाइ हजारमे अछिआ खर्च लाखमे अछितखैन चिन्ता किअए ने पछुऔत।

कर्मदेव- अहाँकेँ की कमाइये टा अछि, गामोमे तते अछिजे.......?

कृष्णदेव- सएह कखनोकाल सोचै छी जे गामक खेत बेच बैंकेमे रखिली। जइसँ मौका-कुमौका काजो करब आ सुदियो हएत।

कर्मदेव- (आँखिगड़ा कृष्णदेवकेँ देखैत...) कक्का, परिवार माया-जाल छिऐ किने? जे गरीब अछिओकरा छोटका माया पकड़ै छै आ जे जत्ते नमहर हुनका ओत्ते नमहर पकड़ै छन्हि।

कृष्णदेव- ठीके कहै छह। राज दुखी परजा दुखी, जोगीकेँ दुख दूना। अपने बात कहै छिअ, गाममे कते खेत अछिसे देखते छहक। समए सुभ्यस्त होइए तँ सालो भरिक बुतातो आ किछु बेचियो-बिकीन लइ छी। ऐबेर सेहो नै हएत।

कर्मदेव- अहाँ सभ पढ़ल-लिखल छी तखैन........?

कृष्णदेव- (मुस्कुराइत...) ब्रह्मफाँसमे पड़िगेल छी। जहिना बाबाकेँ तहिना बाबूकेँ चौगामा लोक मालिक कहै छलनि, मलिकाना निमाहितो छलाह। हमरो लोक तहिना बुझै छथि। मुदा ब्रह्मफाँस केहेन लागल अछिजे ओ मान-प्रतिष्ठा सम्पतिमे सन्हिया गेल अछि। जँ

एको धूर बेचब तँ सोझे प्रतिष्ठा प्रभावित हएत।

कर्मदेव- खाइर, छोड़ू खिस्सा-पिहानी। अपनेसँ भेँट करैलेसमाज पठौलनिहेँ।

कृष्णदेव- (अकचका कऽ...) समाज पठौलखुनहेँ? की बात, की बात, बाजह।

कर्मदेव- ऐ दुआरे पठौलनिहेँ जे गाममे खेत-पथारबला तँ अहीं सभ छिऐ तँए सभकियो एकठाम बैस गामक कल्याणक विचार करी। बेर-बेर रौदी-दाही भऽ जाइए तेकर कोनो स्थायी समाधानक विचार करी।

कृष्णदेव- बहरबैया सभ रहताह?

कर्मदेव- ओहीक जानकारी देबाले पठौलनिहेँ। अहीं लगसँ काज शुरू केलौंहेँ। ऐठामसँ घनश्यामकाका ऐठाम होइत रघुनाथकाका ऐठाम जाएब। हुनका ऐठामसँ मनमोहनकाकाकेँ भेँट करैत गाम जाएब।

कृष्णदेव- अखन घनश्यामक दिन-दुनियाँ दोसर भऽ गेल अछि। एक तँ जमीन-जत्थाबला लोक पहिनेसँ रहलाह तइपरसँ बैंकक नोकरी।

कर्मदेव- हुनकर सोभावो किछु आने ढंगक छन्हि।

कृष्णदेव- सोलहन्नी बनियाँक चालिपकड़ने अछि। खाइर, जुगो-जमाना तँ ओकरे सबहक छिऐ।

कर्मदेव- आठम दिन रविकेँ बैसार छी। से अपने समैपर पहुँचिजाइऐ।

कृष्णदेव- बड़बढ़ियाँ। परसू तक तँ तोहूँ घुरिजेबह?

कर्मदेव- हँ, हँ। जत्ते जल्दी भऽ सकत ओत्ते जल्दी घुमैक कोशिक करब।

कृष्णदेव- चारिम दिन हमहूँ फोनपर सभसँ सम्पर्क करब। एहेन नै जे एक गोटे जाय आ दोसर पहुँचबे ने करी।

कर्मदेव- हँ, हँ, सभ कियो विचारिलेब। आखिर समाजक तँ अहींसभ बुझनुक भेलिऐ किने?

पटाक्षेप।

सातम दृश्य

(घनश्यामक घर। एजेंट शिवशंकरक संग...)

शिवशंकर- मैनेजर सहाएब, हमर कम्पनीक इतिहास सए बर्खक अछि। वस्तुक गुणवत्ता आ व्यापारिक साख एहेन अछिजेकर बाँहिपकड़ैबला दुनियाँमे एकोटा कम्पनी नै अछि। जे पाइप (बोरिंगक) आ इंजन (दमकल) हम देब ओ दोसर कियो नै दऽ सकैए।

घनश्याम- बैंक की कोनो अप्पन छी। मात्र एक ब्रान्चक मनेजर छी। जाबे काज करै छी ततबे धरि। सरकारक नजरिकनी गामक खेत दिस उठल तँए ई अवसर आएल। तइ अवसरसँ..........?

शिवशंकर- हँ, हँ। हमहूँ कहाँ चाहै छी जे अवसरक लाभ नै हुअए।

घनश्याम- परसुए एक गोटे (दोसर कम्पनीक एजेंट) आएल रहथिओ पाँच प्रतिशत कमीशनक बात केने छलाह। ओना अखन धरिहमरो स्पष्ट आदेश ऊपरसँ नहिये आएल अछि। मुदा पैछला मिटिंगमे बाजाप्ता चर्चा भेल रहए। यएह बात हुनको कहिपनरह दिनक बाद भेँट करैले कहलियनि।

शिवशंकर- अहाँ, भलहिं ओइ कम्पनीक बात नीक जकाँ नै बुझैत होइऐ मुदा हम तँ रत्ती-बत्तीक बात बुझै छी। केहेन घटिया माल बना-बना सप्लाइ करैए। ओ दोसर-दोसर बैंकसँ पता लगा लेब। हमर पाइप जँ ओकरापर पटैक देतै तँ थौआ-थाकर कऽ देतै। अहूँ तँ जनिते छी जे नीक वस्तुक उत्पादनमे नीक खरचो बैइसै छै।

घनश्याम- खरचा बेसी बैइसै छै तँ दामो बेसी होइ छै किने?

शिवशंकर- हँ, से तँ होइ छै। मुदा घटिया माल कते दिन चलत सेहो ने देखबै?

घनश्याम- से तँ बेस कहलौं मुदा जे आदेश हएत सएह ने करब।

शिवशंकर- ऐठामक सक्षम किसानक रिपोट देबै तँ किअए घटिया मालक आदेश हएत। जइठीम पछुआएल किसान अछि, पहिने-पहिल बोरिंग देखते ओ किआने गेल नीक-अधला।

घनश्याम- हँ, से तँ मानलौं। मुदा सोलहो आना नेत बिगाड़ियो लेब सेहो तँ नै।

शिवशंकर- (बात लपकि...) हँ, एह विचार हमरो कम्पनीक अछि। जे ऑनर छथिहुनकामे ई भावना कूट-कूट भरल छन्हि। मुदा बीचमे जे घटिया कारोबारी सभ अछिवएह सभ ने नीको मालक बजारकेँ घेर घटिया बजार बना दइए। दू-पाइ बेसियो लगने जँ उपभोक्ताकेँ नीक वस्तु भेटै छै तँ ओकर उपयोगो बेसी दिन करैए।

घनश्याम- मानलौं, जे अहाँक समान तेज अछिमुदा सभकेँ ने अपन-अपन कारोबार अछि। पद आ प्रतिष्ठाक लोभ केकरा नै छै। जे ब्रान्च जत्ते लाभ बैंककेँ देखाओत ओत्ते ने ओइ स्टापकेँ आगू बढ़ैक अवसर भेटतै।

शिवशंकर- हँ, से तँ मानै छी। मुदा हमर ओहन कम्पनी अछिजे देशे नै विदेशोमे सप्लाइ दैत अछि। दू-साल बीतैत-बीतैत घटिया कम्पनी सभकेँ बजारसँ भगा दैत अछि। भलहिं नव बजार ठाढ़ भेने शुरूमे किछु कमाए लिअए मुदा कते दिन।

घनश्याम- खाइर, छोड़ू ओइ सभकेँ। मोट गाछक मोट मुसरो होइ छै। मुदा जहिना अहाँ तहिना हम। अपना दुनू गोटेक बीच संबंध केना बनत, तइपर विचार करू।

शिवशंकर- (ठहाका मारि...) आब रास्ताक बात भेल ने। अखन ने अहाँ सोचै छी जे एक्के भागक आमदनी अछिमुदा से नै। दुनू भाग अछि।

घनश्याम- से केना?

शिवशंकर- हमहूँ गामेसँ आएल छी। पिताजी कर्मचारी छलाह। जखन लगमे बैसै छलियनितखैन जमीन-जत्थाक खेरहा करै छलाह।

घनश्याम- (मुस्की दैत...) की कहै छलाह?

शिवशंकर- (हँसैत...) कहै छलाह जे जखन जमीन्दारी चार्ज सरकार लेलक तखैन हमरा सभकेँ अगहन आबिगेल। खेत-खरिहानसँ लऽ कऽ आँगनिकोठी धरिधाने-धान।

घनश्याम- नै बुझलौं?

शिवशंकर- गाममे कत्ते किसान छथिजिनका जमीनक सही-सलामत सबूत छन्हि। एक तँ पहिनहिसँ जाल-फरेबी, तइपर बाढ़िघर-दुआरक संग कागजो पत्तर ने लऽ जाइ छलै।

घनश्याम- (मुस्कुराइत...) हँ, से तँ अछि।

शिवशंकर- सरकारक सुविधा तँ बैंके माध्यमसँ ने हएत। असल कार्यालय तँ बैंक हएत। जे किछु किसानकेँ भेटत ओइले तँ बैंकेमे ने बौण्ड बनबए पड़त। बौण्डक लेल तँ ताजा सबूत (करेंट कागजात...) चाही। ई तँ अहीं हाथक भेल।

घनश्याम- (हँसैत...) एक प्रतिशत कम कऽ देब।

शिवशंकर- बड़बढ़ियाँ। कारोबारक गप भइये गेल। चलै छी।

घनश्याम- ओहिना जाएब उचित हएत। हम सभ मिथिलांचलक ने छी। अतिथिकेँ देवता बुझैत छी। किछु रस-पानी केने बिना........?

शिवशंकर- आब किओ जुग रहल जे सुरा-सुन्दरीसँ अतिथिक सेवा होइत छल। हम सभ तँ तेहेन जुगमे आबिगेलौं जे ने खाइक ठेकान आ ने आराम करैक।

घनश्याम- (नोकरकेँ सोर पाड़ि...) बहादुर, बहादुर?

(पहाड़ी नौकरक प्रवेश...)

आँखिक इशारा घनश्याम देलनि। भीतर जा दूटा गिलास आ सनतोला रंगक शीशी नेने आबिटेबुलपर रखिचलिजाइत। शीशी खोलिदुनू गिलासमे लऽ दुनू गोटे पीलनि...)

शिवशंकर- आब आदेश होइ। (कहिउठिकऽ ठाढ़ होइत। घनश्यामो ठाढ़ होइत तखने कर्मदेवक प्रवेश। अबिते कर्मदेव पएर छुबैत...)

घनश्याम- बौआ, हिनका विदा कऽ दइ छियनि। निचेनसँ गप-सप्प करब।

कर्मदेव- हँ, हँ, कक्का। हमहूँ किछु विचारे करए एलौंहेँ।

(हाथमे हाथ मिला घनश्याम सड़क तक अबैत छथि। घुरिकऽ आबि...)

घनश्याम- आब कहह बौआ, गाम घरक हाल-चाल। मुदा पहिने कपड़ा खोलिफ्रेश भऽ चाह पीब लए। तखैन निचेनसँ गप-सप्प हेतै।

(चाह अबैत। कमदेवक हाथमे कप धड़बैत घनश्याम अपन चाह आपस करैत...)

कर्मदेव- अहाँ किअए चाह घुमा देलिऐ?

घनश्याम- देखबे केलहक। चाह पीबैत-पीबैत पेट भरिया गेल अछि।

(खाली शीशी आ गिलास देखि...)

कर्मदेव- (मुस्की दैत...) कक्का, की कुशल गामक रहत। एक तँ ओहिना सभतरहेँ खाधिमे खसल छी तइपरसँ तेहेन रौदी भऽ गेल जे परान बँचब लोकक कठिन भऽ गेल अछि।

घनश्याम- जे बात कहलह ओ नान्हिटा नै अछि। मुदा बिना केनौं तँ नहियेे कल्याण हएत। भने छुट्टीक दिन रहने मनो हल्लुक अछि। मुदा तैयो एक दिनमे सभ बात कहलो नै जा सकैए। ओना तू पढ़ल-लिखल नवयुवक छह तँए कम्मो कहने बेसी बुझबहक।

कर्मनाथ- अहाँ सभकेँ बेवहारिक ज्ञान अछिकाका। हम तँ हालेमे कॉलेज छोड़लौंहेँ। गामक लेल तँ सोलहो आना अनाड़िये छी।

घनश्याम- गाम तँ तेहेन भऽ गेल अछिजे दू-चारिगोटे, एकठाम बैस अपन सुख-दुख निवारणक गप करब, सेहो ने अछि। सभ अपने ताले बेताल। कियो अपनाकेँ कम बुझैले तैयारे नै होइत अछि। सबहक मन घेराएल अछिजे हमरासँ बुधियार दोसर के अछि?

कर्मदेव- एना किअए अछि?

घनश्याम- अखन धरिक जे बेवस्था रहल ओ संस्कारे बिगाड़िदेने अछि। मुदा अखन ऐ बातकेँ छोड़ह। अखन जे दुरकाल उपस्थित भऽ गेल अछिओइपर गप करह।

कर्मदेव- हँ, सएह बढ़ियाँ।

घनश्याम- अखन दुइये गोटे छी। तहूमे भने डेरेमे छी। तँए अखन दुइये परिवारक गप करह। देखते छह जे गाममे सभसँ बेसी खेत अछि। बाबाक अमलदारीमे एकटा मुनहर आ तीनटा बखारीक

संग हाथियो छलनि। तखैन नोकरी करैक जरुरत हमरा किअए भेल?

कर्मदेव- (किछु सोचैत...) किअए भेल?

घनश्याम- यएह सोचै आ बुझैक बात छी। हमरा सम्पतिछलए, घरसँ बाहर जा पढ़लौं। मुदा जेकरा खाइयोक उपाए नै छै ओकर बाल-बच्चा स्कूल आँखिदेखत? खिस्सा तँ सभ कहतह जे बहिन रहितो लक्ष्मी-सरस्वतीक बास एकठाम नै होइत छन्हि।

कर्मदेव- (जिज्ञासा करैत...) छातीपर हाथ रखिकहै छी जे ने अपने मनमे अखन धरिई बात उठल आ ने कियो कहलनि।

घनश्याम- ई तँ मात्र पढ़ै-लिखैक बात कहलियह। पढ़नाइ-लिखनाइसँ जरूरी अछिखेनाइ, रहनाइ आ बर-बेमारीसँ बचैक उपाए। आँखिउठा अपने देखह जे किअछि?

कर्मदेव- (आँखिउठा ऊपर-निच्चाँ देखि...) ठीके कहै छी काका। मुदा हएत केना? अहाँ सभ सन बुझिनिहार गामे छोड़िदेने छी तखैन अबूझ केना सबूझ बनत। जाधरिबुझबे ने करत ताधरिआगू डेग केना उठाओत?

घनश्याम- यएह बात बुझैक जरुरत अछि।

कर्मदेव- जाधरिबुझत नै ताधरिओहिना पाछू मुँहे गुड़कैत जाएत।

घनश्याम- (दुनू हाथसँ दुनू आँखिमलैत...) बौआ, सच पुछह तँ अपना सभ स्वतंत्र देशक गुलाम छी। किसानक देश पूँजीपतिसँ हारिगेल छी। भलहिं एकरा पछुआएब कहिअपन प्रतिष्ठा बचा ली मुदा शासनसँ बाहर छी।

कर्मदेव- सरिया कऽ कहियौ कक्का। नीक नहाँतिनै बुझलौं।

घनश्याम- सत बात बजैमे कनियो धड़ी-धोखा नै होइए। जइ परिवारक सम्पतिसँ चालिस-पचास परिवार चलै छल तइ परिवारकेँ नोकरी करए पड़ै, कते लाजिमी छी। मुदा.....?

कर्मदेव- काका, अहाँ लगसँ जाइक मन नै होइए। मुदा काजक भार बैइसै ने दिअए चाहैए। किएक तँ एक निश्चित सीमामे काजक

सम्पादन नै भेने, गड़बड़ाइये जाएत। अखन समाजक काजमे बन्हाएल छी। निचेनमे दोसर दिन औरो बुझब।

घनश्याम- हँ, हँ। से तँ ठीके कहै छह। मुदा आइ बूझिपड़िरहल अछिजे एकटा संगी भेटल, जे पेटक बात पेटमे लिअए चाहैए। कोन चीजक कमी अछि।

कर्मदेव- से तँ नहिये अछि।

घनश्याम- ओना लोकक बुइधविपत्तिक मारिसँ घटैत-घटैत एते घटिगेल अछिजे समयक संग पकड़िनै पबैत अछि। खाइर छोड़ह। काजक बात कहह?

कर्मदेव- गामक दशा बदसँ बदतर भऽ गेल अछि। माल-जाल उपैट रहल अछि। लोक भागिरहल अछि। चलन्त सम्पति(खेत) पाछू मुँहे ससरिरहल अछि। यएह सभ देखिसमाज विचार केलनिजे अगिला रविकेँ सभ मिलिबैसार करी जइमे गामक कल्याणक बाट ताकी।

घनश्याम- (अध हँसी हँसि...) हृदए गामक संग अछि। तँए जत्ते संभव हएत ओत्ते समाजक सहयोग करब।

कर्मदेव- जखने अहाँ सभ तैयार हेबै तखने समाजक कल्याण निश्चित हएत। आब जाइ छी।

घनश्याम- तोरा जइ चीजक जरुरत हुअ, आन नै बुझिहह। बड़बढ़ियाँ जाह।

पटाक्षेप।

आठम दृश्य

(इंजीनियर मनमोहनक डेरा। दोसरिसाँझ। मनमोहन आ संतोष गप-सप्प करैत...)

मनमोहन- बाउ, पहिल ज्वानिंग छिअह, तँए पहिने घोसिया जाह। पछातिबदलीक जोगार लगा देबह।

संतोष- बाबू, भलहिं अहाँ सभ दिन शहरमे रहलौं मुदा गाम गाम छी।

मनमोहन- से की?

संतोष- डेरासँ ऑफिस आ ऑफिससँ डेरा करैत रहलौं, ऑफिसमे बैस घरसँ सड़क धरिक नक्शा कागजपर बनबैत रहलौं जइसँ काजक दायरा सिकुड़ गेल। मुदा हम तँ चारिबर्खमे माटिये-पानिक गुण-अवगुन बुझलौं। अपार धन माटिपानिमे छिपल अछि।

मनमोहन- से केना?

संतोष- अपना ऐठामक जे माटिपानिआ मौसम अछि,ओ दुनियाँमे कतौ ने अछि। नान्हिटा देश जापान, जे ऐशिये महादेशमे अछि, देखियौ ओकरा।

मनमोहन- की अछि, केहेन अछि।

संतोष- ओना ओकर आन बात तँ नै पढ़लौंहें। मुदा ओकर भौगौलिक बनाबटिआ उन्नतिजरूर पढ़लौंहें। अपना देशक (पहिलुका एक राज्य) दूटा राज्यक बराबरिओकर लम्बाइओ-चौड़ाइ छै आ जनसंख्यो छै। मुदा दुनियाँक अगुआएल देश अछि।

मनमोहन- एतबे टा अछि?

संतोष- एतबेटा किअए कहै छिऐ। ओहूमे दुनियाँक सभ देशसँ बेसी भूमकमो होइ छै।

मनमोहन- भूमकम किअए होइ छै?

संतोष- ओइठाम ज्वालामुखी बेसी अछि। खाइर, ऐ बातकँ छोड़ू। छोट देश आ कम आबादी रहितो ओ ओत्ते अगुआ किअए गेल अछि।

मनमोहन- किअए अगुआएल अछि?

संतोष- जहिना ओकर खेती अगुआएल अछितहिना कल-कारखाना। दुनियाँक बाजारमे ओकर माल पटने अछि। तहिना खेतिओक छै। जत्ते उपज (रकबा हिसाबे) ओकरा होइ छै ओत्ते केकरा होइ छै।

मनमोहन- केना एते उन्नतिखेती केलक?

संतोष- ओइसँ बेसी अपनो सभ कऽ सकै छी। मुदा ऐठाम सभसँ पैघ कारण अछिजे साठिबर्खं आजादीक उपरान्तो ऐठामक लोक गुलामीक जिनगी जीब रहल अछि। स्वतंत्र नागरिकक संस्कार आ गुलामीक संस्कारमे अकास-पातालक अन्तर होइ छै। ओना अपनो देश उद्योग-धंधामे जत्ते अगुआएल अछिओत्ते खेती-पथारीमे नै अछि। जे भारी खाधिदुनूक बीच बनल अछि।

मनमोहन- एहेन बात अछि?

संतोष- अपने बात लिअ। अखनो गाममे खेतबला परिवार अपन अछि। मुदा खेती करै छी? सभटा बटाइ लगौने छी। बटेदारो सभ तेहेन अछिजे ने ओकरा खेत जोतैक उचित साधन छै आ ने खेती करैक आन साधन। सोलहो आना मौनसूनपर निर्भर रहैत अछि। एक तँ साधन नै दोसर करैक ऊहियो ओहन नै जइसँ दुनियाँक खेतीक बराबरीमे औत।

मनमोहन- ओत्ते मत्था-पच्ची करैक कोन जरूरी छह। खाइत-पीबैत रामलला। जहुना जिनगी चलै छह तहुना जे निमाहिलेबह, ओहो कम भेल।

संतोष- नै बाबू, जिनगीक सार्थकता होइत अपनासँ आगू बढ़िकरैक। सरकारोक आँखिगाम दिस उठलहेँ, तँए ओकर उपयोग हेबाक चाही। जहिना बाबा अमलदारीमे बखारीक शोभा छल तहिना फेर हएत?

मनमोहन- अखन जत्ते असानीसँ शहरक लोक जिबैत अछिओत्ते गाममे थोड़े हएत?

संतोष- ओइसँ बेसी हएत। हँ अखन नै अछि। मुदा केना हएत ई तँ

गामेक लोककेँ सोचए पड़तै। अपने बात लिअ, हजार-बजारक नोकरी खुसीसँ करै छी मुदा ई बुझै छिऐ जे जँ अपन खेतकेँ समुचित सुविधा बना कएल जाएत तँ करोड़ोक आमदनी हएत?

मनमोहन- हमरो नोकरी लगिचाइले अछि, संगे शरीरो एते भरिआ गेल अछिजे किछु करै जोकर नहिये रहलौं। एहना स्थितिमे केना जीब?

संतोष- केना की जीब? जहिना गाम छोड़िनोकरी करए शहर एलौं तहिना शहर छोड़िगाम चलब। हमहूँ ओतबे दिन नोकरी करब जाबे तक अपन समुचित खेतीक रुप नै पकड़िलेत। अहाँ नै देखै छिऐ जे पँच-पँच-सत-सत सए रूपैये किलो अन्नक बीआ, आन-आन देशबला बेचैए। कनी गौर कऽ कऽ देखियौ जे किलो भरिअन्नक दाम कते अछि।

मनमोहन- हँ, से तँ सुनै छी।

संतोष- की हम अपने ओहन बीआ तैयार नै कऽ सकै छी। जरूर कऽ सकै छी। तहिना नीक बना पशुपालन, नीक किस्म बना माछ आ औरो कते कहब। हाथसँ करैक हिम्मत आ माथसँ सोचैक शक्तिक जरुरत अछि।

(कर्मदेवक प्रवेश...)

मनमोहन- आ-हा-हा, बाउ कर्मदेव?

कर्मदेव- (दुनू हाथ जोड़ि...) प्रणाम, चाचाजी।

मनमोहन- बाउ (संतोष) लोटामे पानिनेने आबह। बाटक झमाड़ल छथि। तेकरा बाद चाह-पान चलतै।

(संतोष भीतर जाइत अछिआ लोटामे पानिआनि, कर्मदेवक आगूमे ठाढ़ भऽ...)

संतोष- होउ, पहिने पएर धोउ?

कर्मदेव- अच्छा पछातिधो लेब। कोनो किपएरे चललौंहें। सड़कपर सबारीसँ उतरलौंहें।

मनमोहन- चाह नेने आबह। (संतोष भीतर जाइत अछि...) आकिपहिने किछु खेबह?

कर्मदेव- नै, अखन किछु ने खाएब। मन गदगड़ल अछि। चाह पीब लेब।

(दू कप चाह नेने संतोष अबैत अछि...)

मनमोहन- (चाहक चुस्की लैत...) अब कहह गामक हाल-चाह?

कर्मदेव- गामक हाल-चाह की कहब चच्चाजी। नरकंकाल जकाँ गामक हाड़ झक-झक करैए।

(कर्मदेवक बात सुनिमनमोहन बेउत्तर होइत मुँहपर हाथ लऽ मुड़ी झुका कऽ सोचए लगै छथि। बीचमे ठाढ़ संतोष कखनो पिता दिस देखैत तँ कखनो कर्मदेव दिस। मुदा किछु बजैत नै। दुनू गोटेकेँ चुप देखि...)

संतोष- हम जेठ छी की कर्मदेव, बाबूजी?

मनमोहन- कर्मदेवक तँ नै बुझल अछिमुदा तोहर एक्कैसम लगिचाएल छह।

कर्मदेव- हमरो एक्कैसम चलिरहल अछि।

मनमोहन- तखैन तँ किछुए मासक कम-बेसी हेतह। एक बतरिये भेलह।

कर्मदेव- चाचाजी, जौआँ बच्चाक अंतर पाँचे-दस मिनट होइ छै मुदा ओहूमे जेठाइ-छोटाइ होइ छै?

मनमोहन- हँ, से तँ होइ छै। मुदा ई तँ सर्टिफिकेटसँ फरिएतह।

कर्मदेव- ओहूसँ नीक जकाँ (इमानदरीसँ) नहिये फड़िआएत? किएक तँ अहाँ घरमे भलहिं जन्म टिप्पणिहुअए मुदा हमरा घरमे नहिये अछि। टिप्पणिदेखिस्कूलमे नाओं लिखौने होय, मुदा हमर तँ अनठेकानी लिखाएल अछि।

मनमोहन- भैयारी बनब पेंचगर छह। दुनू गोरे दोस्ती कऽ लए। संतोषोक विचार गामेमे रहैक छै आ तहूँ गामेमे रहै छह।

कर्मदेव- (मुस्की दैत...) चाचाजी, अहाँ तँ अमृत फल खुआ देलौं। मित्र तँ नरकोसँ उद्धार करैत अछि।

(तीनू गोटेक ठहाका...)हम केमहर एलौं से तँ पुछबे ने केलौं?

मनमोहन- गामसँ हटिभलहिं रहै छी, तँए किसमाजक सभ किछु छोड़िदेलौं। दुआरपर आएल अतिथिकेँ पुछल जाइ छै जे केमहर एलौं?

अतिथियेक सेवा तँ धर्मखातामे लिखाइत अछि।

कर्मदेव- (मुस्की दैत...) अपने कहै छी। अखन धड़फड़ीमे छी तँए बेसी गप-सप्पमे समए नै दऽ सकब। जत्ते समए गमाएब तते काज पछुआएत।

(मनमोहन आ संतोषो सुनैक इच्छासँ कर्मदेव दिस तकए लगैत...)

रविदिन समाजक बैसार छी, सएह कहए एलौं।

मनमोहन- कनी फरिछा कऽ बाजह?

कर्मदेव- गामक मूल पूँजी (उत्पादित) खेत छी। खेतेक उपजापर गामक लोक ठाढ़ भऽ जिनगी चलबैत अछि। समाज तँ बनिगेल मुदा सामाजिक पूँजी नै बनिसकल। जइसँ एते भारी खाधि(दूरी) दुनूक बीच बनिगेल जे अछैते पूँजिये लोक पूँजी विहीन भऽ गेल अछि। अही सबहक विचारक लेल बैसार भऽ रहल अछि।

मनमोहन- (मुड़ी डोलबैत...) उद्देश्य तँ जवरदस अछि, मुदा......?

कर्मदेव- मुदा की। ऐ धरतीपर सभसँ अगुआएल मनुख अछि, तखैन?

संतोष- कर्मदेव भाय, अहूँ हालेमे कओलेज छोड़लौंहें आ हमहूँ हालेमे। बेवहारिक दौरमे दुनू गोरे अनाड़िये छी। किएक तँ जइ गाममे रहै छी ओ जमीनक एक निश्चित सीमाक अन्तर्गत निर्धारित अछि। जहिना जमीन तहिना बसल लोक। मुदा.....।

कर्मदेव- मुदा की?

संतोष- जमीनकेँ जाल कहल जाइ छै। जाल फँसबैक वस्तु छी। जहिना मछबार जाल फेकिमाछ फँसबैत, शिकारी शिकार फँसबैत, तहिना शिकारी सभ जमीनक जाल फेकिजमीनकेँ फँसा नेने अछि, तँ........?

(आँखिविथाड़िमनमोहन संतोषपर देने। तहिना कर्मदेव सेहो संतोषक आँखिपर-आँखिअटकौने...)

कर्मदेव- तँए की?

संतोष- छोटका जालमे छोट माछ आछोट शिकार फँसैत मुदा जेना-जेना जाल नमहर होइत तेना-तेना नमहर माछो आ शिकारो फँसैए।

जखन किमहजालमे छोट-पैघ सभ फँसैए। तहिना अखन सम्पतिक दौगमे विश्व-जाल पसरल अछि।

कर्मदेव- नीक जकाँ हमरो नै बुझल अछि। मुदा इशारा रुपमे ओइ दिन सुनलौं जइ दिन कओलेज दीक्षाक सर्टिफिकेट समारोहमे शिक्षक लोकनिविदा केलनि।

कर्मदेव- दीक्षाक अर्थ?

संतोष- सेहो ओही दिन बुझलौं। कान फूकिदीक्षा मंत्र देनिहार जेरक-जेर घुमैत अछि। मुदा दीक्षाक अर्थ होइत प्राप्ति। अहाँ कओलेजसँ निकलैक सर्टिफिकेट नै लेलौंहेँ?

कर्मदेव- हँ, ऑफिससँ तँ जरूर भेटल मुदा दीक्षान्त समारोह कऽ कऽ नै।

संतोष- किअए?

कर्मदेव- नीक जकाँ तँ नै बुझल अछिमुदा दस-पनरह बर्खसँ कहाँ दीक्षान्त समारोह भेलहेँ।

संतोष- साले-साल हेबाक चाहियेक।

कर्मदेव- भने भाय अहूँ गामेमे रहिमोटर साइकिलसँ ऑफिसो करब आ गामोक काज देखब।

संतोष- बेसी समए गामेक काजमे लागत।

कर्मदेव- बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया।

पटाक्षेप

नवम दृश्य

(डॉ. रघुनाथक घर। ओसारक कुरसीपर बैसल, माथपर हाथ दऽ आँखिमूनिसोचैत। चाह नेने पत्नी अनुराधा अबैत...)

अनुराधा- आँखिलगल अछि। चाह पीबू।

रघुनाथ- आँखिकिलागत कपार। अनेरे आँखिबन्न भऽ रहल अछि।

अनुराधा- अपने डॉक्टर छी तखैन......?

रघुनाथ- अपने डॉक्टर छी तकर माने.......?

अनुराधा- तखैन किअए रोग......?

रघुनाथ- रोगक सीमा-नाङरिअछि। मनुक्खे जकाँ बिना सींघ-नाङरिक जानवर जकाँ अछि। देहक रोगक डॉक्टर ने छी, मनक रोगक थोड़े छी।

अनुराधा- से की?

रघुनाथ- कोनो किदेहेटा मे रोग होइए। मुदा मनोक तँ देहे जकाँ ने सभ किछु छै।

अनुराधा- तखैन तँ औरो नीके किने। जहिना थर्मामीटरसँ बोखार परखल जाइ छै, तहिना ने मनोक बोखार परखैक यंत्र हेतै। तइसँ नापिदबाइ खा लिअ।

रघुनाथ- विधाता ऐठाम जखन बुइधिक बँटबारा हुअए लगल तखैन सभकेँ चम्मछ लऽ लऽ देलखिन आ अहाँ बेरमे बरतने उझलिदेलनि।

अनुराधा- एना बताह जकाँ किअए बजै छी? जखन मन गड़बर भऽ गेल तखैन ओकर प्रतिकार करब। हमहूँ सहयोगी छी, सहयोग करब आकिसभकेँ भगा अपने पगलखन्नाक हरीमे ठोकाएब। मन थीर करू। चाह पीबू सिगरेट नेने अबै छी।

(अनुराधा भीतर जाइत। रघुनाथ एक-एक चुस्की चाह पीबैत आ कखनो अकास दिस तँ कखनो निच्चाँ दिस तकैत...)

रघुनाथ- (बड़बड़ाइत...) भूमकम भेलापर उनटनो होइत। जहिना अकासक

गाछ-जमीनपर खसैत तहिना ने जमीनो अकास दिस चढ़ैत। मुदा पाबस तँ अकासकेँ अमृतसँ सीचैत।

(रघुनाथकेँ बड़बराइत देखिअनुराधा मुहथरिपर ठाढ़ भऽ सुनए लगली...)

आ-हा-हा किसुन्दरता पाबसोक होइत। करोड़ो-अरबो जीब जन्तुकेँ सृजनो करैत, अमृतेसँ स्नानो करबैत, पीबोक लेल दैत आ दुनूक (अकास-जमीन) बीच अमृतेक बाटो बनबैत।

अनुराधा- (मने-मन उदास भऽ...) भरिसक बुधिक बीमारी पकड़िलेलकनि। (आगू बढ़ैत) लिअ सिगरेट-सलाइ नेने एलौं। चाहो तँ नहिये पीलौंहेँ?

रघुनाथ- हमरे नै सुझैए आकि........। मन भरिगेल अहाँ कहै छी चाहो ने पीलौं।

(रघुनाथक मुँहक सुरखी उदास होइत जाइत...)

अनुराघा- मुँहक सुरखी बदलिरहल अछि?

रघुनाथ- लाउ, सिगरेट पीब तखैन चुहचुही आओत। की भकुआएल जकाँ बूझिपड़ै छी? (सलाइ खरड़िसिगरेट धड़ा कस खींच ऊपर मुँहे धुआँ फेकैत...) देखिऔ धुँआ केना ऊपर मुँहे जाइए।

अनुराधा- ओछाइन ओछा दइ छी। आराम करू।

रघुनाथ- कहलौं तँ विधाता बुइधिक बरतने अहाँ आगूमे उझलिदेलनि। जागलमे जइ रोगकेँ भगाओल (इलाज) नै हएत सुतलमे केना हएत?

अनुराधा- किसभ होइए?

रघुनाथ- बैसू, कहै छी। ब्रज कन्या तँ अहींटा छी तँए अपन दिलक-दुख अहाँकेँ नै कहब तँ दोसराकेँ कहने किहएत?

अनुराधा- (मुस्की दैत...) से की, से की?

रघुनाथ- अहाँ जे भकुआएल बुझै छी से ठीके बुझै छी। मुदा नीनक भक्क नै जिनगीक रास्ताक भक्क लागल अछि! किमहर जाएब से चौराहापर बुझिये ने पबै छी।

अनुराधा- बीचमे ठाढ़ भऽ कऽ देखियौ जे कोन बाटक दुभि(खढ़-पात) पएरक रगड़सँ उड़िगेल छै आ कोन दुभियाह अछि।

रघुनाथ- कहलौं तँ बेस बात, मुदा भकुआएल मने देखबो करिऐ तखैन ने। आन्हरे जकाँ सभ अन्हार बूझिपड़ैए। (दुनू आँखिदुनू हाथसँ मलैत...)किसपना छल आ की देखिरहल छी।

अनुराधा- से की? से की?

रघुनाथ- सभ किछु समाप्त भऽ रहल अछि। आकिजिनगिये समाप्त भऽ रहल अछिसे बुझिये ने पाबिरहल छी।

अनुराधा- से की?

रघुनाथ- परसु रिटायर करब।

अनुराधा- सभ रिटायर करैत अछिआकिअहींटा करब?

रघुनाथ- खाली नोकरियेटा सँ नै ने रिटायर करब। देहोक रोग (ब्लड प्रेशरो) किछु बढ़िगेल अछिजइसँ रोगी सबहक शिकाइत आबिरहल अछि।

अनुराधा- से तँ आब उमेरो भेल किने?

रघुनाथ- उमेरक असर शरीरपर पड़ै छै आकिब्रेनपर। आमक आठी जकाँ कोइलीसँ पकुआ बनत आकिपकुआसँ कोइली।

अनुराधा- तखैन किअए एना भेल?

रघुनाथ- ब्रेने छिड़िया गेल। एकरा केना समटब।

अनुराधा- आबो समटू।

रघुनाथ- छिड़िआएल बौस बीछ-बीछिसमटल जा सकैए। छिड़िआएल मन केना समटल जाएत? पाछू उनटितकै छी तँ कतौ गड़बड़ नै देखै छी। मुदा आगू तकै छी तँ नोकरीक संग प्राइवेट कमाइयोकेँ जाइत देखै छी।

अनुराधा- से केना?

रघुनाथ- चढ़ंत छल तखैन मकान बनेलौं, क्लीनिक बनेलौं। रेस्ट-हाउसक संग जाँच-पड़ताल करैक यंत्र कीनलौं। मुदा आइ की देखै छी?

अनुराधा- की नै देखै छी, कोन चीजक कमी अछि?

रघुनाथ- अपने मुइने जग मुअए। जइठीन रोगीक भीड़ लागल रहै छलए तइठीन गोटिपङरा आबिरहल अछि। तहिना रेस्ट-हाउस ढन-ढन करैए। सप्ताहक-सप्ताह जाँच मशीन बैसले रहैए। अपनो दरमाहा अधियाइये जाएत। मुदा खर्च.......?

अनुराधा- एना किअए भेल?

रघुनाथ- समए कते आगू बढ़िगेल, से नै देखै छी। सभ चीज पुरान पड़िगेल।

अनुराधा- ऐ सभ दिस नजरिनै गेल छल?

रघुनाथ- नजरिकेना जाएत। नजरितँ शान्तचित्तमे टहलैत अछि। से कहियो कहाँ भेल। दिन-राति एकबट्ट कऽ काजमे लागल रहलौं। जिनगीक विषयमे सोचैक पलखतिये कहिया भेल।

अनुराधा- चिन्तो केने तँ नहिये हएत।

रघुनाथ- से तँ नहिये हएत। मुदा अनहरिया रातिजकाँ अन्हार तँ बढ़ले जाइए।

(कर्मदेवक प्रवेश...)

कर्मदेव- (दुनू हाथ जोड़ि) गोड़ लगै छी चच्चाजी। (अनुराधाक पएर छुबि)गोड़ लगै छी चाचीजी।

रघुनाथ- गाम-घरक हाल-चाल कहह?

कर्मदेव- गाम-घरक किहाल-चाल रहत। रद्दी कागज जकाँ गामोक दशा भऽ गेल अछि। पैछला साल तँ कनी-मनी नीको छल जे ऐ बेरक रौदी तँ उजाड़िलगा देलक।

रघुनाथ- बौआ, अपनो दशा ओहने भऽ गेल। मुदा कहबो केकरा करबै। अपन हारल बजितो लाज होइए। मुदा.......?

कर्मदेव- मुदा की?

रघुनाथ- यएह जे गामक समाजमे अखनो बेर-बिपत्तिपड़लापर एक-दोसरकेँ सहारा दैत। मुदा बजारक समाज तँ ठीक उल्टा अछि। सभ अपने ताले-बेताल अछि। केकरा एते छुट्टी छै जे अनको हाल-चाल पूछत।

कर्मदेव- चाचाजी, अखन हमहूँ औगताइले छी। कहियो निचेनसँ गप-सप्प करब। अखन जइ काजे एलौं से गप करू।

रघुनाथ- केहेन काजे धड़फराएल छह?

कर्मदेव- गामक दशा देखिसमाजक (गौआँक) विचार भेलनिहेँ जे जेहो सभ बाहर नोकरी-चाकरी करै छथिहुनको सभकेँ बजा समाजक कल्याण केना हएत? तइले एकठाम बैस रास्ता निकाली। सएह कहए एलौंहेँ।

रघुनाथ- छाँहो-छुहो तँ किछु कहह?

कर्मदेव- चाचाजी, गाममे जे छथिहुनका दूधक डाढ़ी जकाँ अपन खेत छन्हि। जखन किजे बाहर रहै छथि, बेसी जमीन हुनके सबहक छन्हि। तइले बैसार भऽ रहल अछि।

रघुनाथ- विचार तँ बड़ दिव्य अछि, मुदा........?

कर्मदेव- मुदा की?

रघुनाथ- थाके पॉव पलंग भेल भारी, आब की लादब हौ बेपारी।' सोझे आगूमे देखै छह। धानक खखड़ियोसँ बत्तर हालत भऽ गेल अछि। जेहो जिनगी बाकी (बँचल) अछिओहो पहाड़ जकाँ बूझिपड़ैए।

कर्मदेव- से किअए, चाचाजी?

रघुनाथ- बौआ, डॉक्टरी छोड़िआन चीज तँ पढ़लौं नै जइसँ दुनियो-दारीक बात बूझितौं। ऐ अवस्थामे आब बूझिपड़ैए जे जिनगिये ओझरा गेल।

कर्मदेव- जखने सभ मिलिएकठाम विचार करब तखने ने अहूँक ओझरी छूटिजाएत।

रघुनाथ- (कने गुम रहि, किछु सोचि...) बहरबैया सभ रहताह?

कर्मदेव- आश्वासन तँ सभ देलनि। तखैन तँ........?

रघुनाथ- कहियाक समए बनौलनि?

कर्मदेव- समए तँ समाजे बनौने छथि। अहाँकेँ जानकारी दिअ एलौं। रविदिन दू बजेसँ बैसार छी।

रघुनाथ- बड़बढ़िया। जरूर भाग लेब। परसुए सेवा-निवृत्तिसेहो भऽ रहल छी।

कर्मदेव- परसुए सेवा-निवृत्त भऽ रहल छी?

रघुनाथ- (मिड़मिड़ा कऽ...) हँ, बौआ।

कर्मदेव- (मुस्की दैत...) चाचाजी, अहीं सन-सन लोकक जरुरत समाजकेँ छै।

रघुनाथ- से की?

कर्मनाथ- ऐठामक काज ने हरा गेल। मुदा गाममे अहाँ सभले ओत्ते काज अछिजे कएले ने पार लागत।

रघुनाथ- (किछु सोचि, मुस्कुराइत...) बेस कहै छह बौआ।

पटाक्षेप

दसम दृश्य

(कृष्णदेव, घनश्याम, मनमोहन आ रघुनाथ। घनश्याम घर। चाह-पान, सिगरेट चलैत...)

घनश्याम- कर्मदेव जे किछु कहलनि, तइपर तँ अपनो सभ विचारिलेब।

कृष्णदेव- अबस-अबस।

घनश्याम- एक तँ बैंकक नोकरी, तहूमे ब्रान्चक जबावदेही। भरिदिन लोकक चरबाहिकरैत-करैत परेशान रहै छी। जइसँ गाम-समाजक कुशलो-क्षेम नै बूझिपबै छी। तँए अपने दिशा-निर्देश दियौ।

मनमोहन- बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया घनश्याम भाय बजलाह।

कृष्णदेव- कहलौं तँ बड़बढ़िया, मुदा जे चकचकी अहाँ सबहक अछिओ थोड़े अछि।

रघुनाथ- मनक बात अहाँ बूझिगेलौं।

कृष्णदेव- अहाँ सभ कागज-पत्रक बीच रहै छी। हम किताबक बीच, अन्तर एतबे अछि। मुदा रहै छी तँ सभ कागजेक बीच।

रघुनाथ- कहलिऐ तँ बड़बढ़िया, मुदा हम सभ सादा कागजक बीच रहै छी अहाँ सजौल कागजक बीच।

कृष्णदेव- सभकेँ अपन-अपन बुझैक दायरा होइ छै, तँए अहूँ सबहक विचारकेँ नकारिनहिये सकब। मुदा किछु छिपा कऽ बाजब उचित नै, तँए.......?

रघुनाथ- तँए की? जखने अपन-अपन विचार सभ व्यक्त करब तखने ने चारिपरिवारक तित-मीठ सोझामे आऔत। जखने तित-मीठ सोझामे आऔत तखने ने किछु........?

कृष्णदेव- ई बात तँ सभ बुझै छिऐ जे गामक-समाजक- पढ़ल लिखक अपने सभ छिऐ। मुदा अपनो सबहक बीच तँ चारिरँगक जिनगियो अछि। जइठीम अहाँ सभकेँ दरमाहाक संग आनो आमदनी अछितइठीम हमरा तँ मात्र दरमेहेटा अछि।

मनमोहन- (मुड़ी डोलबैत...) हँ, ई तँ अछि।

कृष्णदेव- मुदा परिवार तँ जहिना अहाँ सबहक अछितहिना अछि। खेनाइ-पीनाइ, कपड़ा-लत्ता, पढ़ाइ-लिखाइ तँ सभकेँ अछि। कनी सोचिकऽ देखियौ जे हम अहाँ सभसँ पछुआएल छी किने।

रघुनाथ- मानै छी। मुदा गामक बैसारमे गामक चर्च हएत किने। तइ हिसाबसँ तँ सभ जमीनदारे (अधिक जमीनबला, नै किमालगुजारीबला) छी। गामक बारह आना जमीनक मालिक तँ अपने सभ छिऐ किने।

कृष्णदेव- हँ, से तँ छिऐहे। मुदा ओझरियो तँ असान नै अछि। जइ तरहक जिनगी बनिगेल अछिओत्ते कमाइ-दरमाहा-सँ पूरा नै पबै छी। अपने गाममे नै रहै छी जे खेतियो करब। तइपर सँ जँ एको धूर बेचब तँ प्रतिष्ठा माटिमे मिलत।

मनमोहन- तखैन?

कृष्णदेव- जँ सबुर कऽ छोड़ियो देब सेहो नै हएत।

मनमोहन- ई तँ विचित्र ओझरीमे फँसिगेल छी?

कृष्णदेव- बाल-बच्चाकेँ नीक स्कूल-कओलेजमे नै पढ़ाएब सेहो नै हएत। किछुए दिनक उपरान्त रिटायर करब तखैन औझुका जकाँ दरमहो नै रहत। तीन-तीनटा कन्यादान अछि।

रघुनाथ- अच्छा, गामक बैसार संबंधमे विचार रखियौ।

कृष्णदेव- की विचार राखब, किछु फुड़बे ने करैए।

घनश्याम- आब अपन विचार दियौ डॉक्टर सहाएब?

रघुनाथ- कृष्णदेव बाबूसँ कनियो नीक नै छी।

घनश्याम- से किअए? हुनके जकाँ बेतनेटा पर तँ नै छी?

रघुनाथ- बेस कहलौं। दुरसक ढोल सोहनगर लगै छै। मुदा लगमे.......।

मनमोहन- जँ लग तबला हाथ बजौल जाए, तखैन.......?

रघुनाथ- बेस कहै छी। तबले जकाँ ढोलोक मुँह छोट आ पॉलिस कएल होइए। रिटायर भेने पेन्शन (आधा दरमाहा) पर आबिगेलौं। जत्ते जाँच-जुच करैक यंत्र कीनने छी ओ पैछला खाढ़िक भऽ गेल।

नवका ठाढ़ भऽ गेल। अपन जे इलाजक प्रक्रिया छल ओ पछड़िगेल।

मनमोहन- आगूक किसाचै छिऐ?

रघुनाथ- रोग-रोगी आ इलाज छोड़िसोचलौं कहिया जे आन बात सोचब।

मनमोहन- जीब केना?

रघुनाथ- जे भोग-पारसमे हएत से थोड़े कियो बाँटिलेत। जाबे सुखक दिन छल सुख केलौं, दुखक दिन आऔत दुख करब। यएह ने भगवानक लीला छियनि।

घनश्याम- अपने सभ जे एना सोचबै तखैन समाज केना आगू बढ़त? समुद्रक ज्वार जकाँ तँ समाजक गतिनै छैक।

रघुनाथ- (कने गुम्म भऽ, मुड़ी डोलबैत...) प्रश्न तँ विचारणीय अछि। मुदा आगूक स्पष्ट रास्ता कहाँ देखिपबै छी। कनी समए दिअ, पछातिकहब।

मनमोहन- भाय सहाएब, अहाँसँ कनियो नीक नै छी।

घनश्याम- (मुस्कुराइत...) से की। से की?

मनमोहन- ओना पाँच बर्ख नोकरी बँचल अछि। मुदा जे रूखिदेखिरहल छी ओइसँ बूझिपड़ैए जे आगूमे बनरफाँस लटकल अछि।

घनश्याम- से केना?

मनमोहन- अपने इंजीनियर बनिगामसँ शहर एलौं आ बेटा एग्रीकल्चर पढ़िगामेक ब्लौकमे जुआइन करत।

घनश्याम- ई तँ बढ़ियाँ बात।

मनमोहन- अपने कतऽ रहब। सभ दिन शहरमे रहलौं आब गाममे नीक लागत?

घनश्याम- शहरेमे रहब।

मनमोहन- कहलौं तँ बड़बढ़िया। अपन बेटा-पुतोहु गाममे रहत। रिटायर भेलापर सरकारिये अमिला-फमिला रँगगर कपड़ा पहिरा विदा कऽ देत। तखैन.......?

घनश्याम- तखैन की?

मनमोहन- बुढ़ाड़ीमे एक गिलास पानियो के देत।

घनश्याम- गामे चलिआएब।

मनमोहन- (मजबूरी हँसी...) सभ दिन पढ़ल-लिखल लोकक बीच प्रतिष्ठा बना रहिरहल छी। मुदा गामक कोन लूरिअछिजे बुधिक उपयोग करब।

घनश्याम- नै बुझलौं?

मनमोहन- जेकरा जइ काजक लूरिरहल ओ ओहीमे ने बुधियार अछि। मुदा हम?

रघुनाथ- तीनू गोटेक बात तँ सभ सुनबे केलौं। अहीं (घनश्याम) आब विचार दियौ।

घनश्याम- भाय सहाएब, अपने बिगड़िगेलिऐ।

रघुनाथ- बिगड़ब किअए। मुदा.......।

घनश्याम- मुदा की?

रघुनाथ- बिनु बुझल पैघ रोग रहितो जँ रोगीकेँ रोगक जनतब नै दऽ रोगमुक्त होइले दबाइ खाइले कहबै तँ हँसी-खुशी खाइए।

घनश्याम- हँ से तँ खाइए। मुदा इहो तँ होइ छै जे समुचित ढंगसँ रोगक जनतब दऽ इलाजोक प्रक्रियाक जनतब देल जाए तँ औरो खुशीसँ दबाइ खाइए।

मनमोहन- हँ, इहो तँ होइए।

घनश्याम- मनमोहन भाय, जहिना रोगक इलाज डॉक्टर, इंजीनिक इंजीनियर करैत छथितहिना समाजक कल्याण समाजशास्त्री करै छथि। मुदा.......?

मनमोहन- मुदा की?

कृष्णदेव- (बिच्चेमे...) समाजशास्त्री तँ हमहूँ छी। जिनगी भरिसमाजशास्त्रे पढ़लौं। मुदा......।

घनश्याम- भाय सहाएब, अपने अधिकारी विद्वान छिऐ, तँए........?

कृष्णदेव- तँए की?

घनश्याम- हम बैंकर नै छी, मुदा बैंकक काज केने समाज आ धनक संबंध

थोड़-थाड़ बुझए लगलौं। तँए कृष्णदेव भायसँ आग्रह करबनिजे जँ आदेश दथितँ किछु कहबनि।

कृष्णदेव- जखन सभ एक प्रश्नपर बैसल छी तखैन आदेश कि?। अखन तँ सभ अपन-अपन सुझिक अनुसार सुझाव रखिरहल छी।

घनश्याम- अपने तँ किताबमे लिखल पढ़ै छी मुदा किताबी बात ताधरिठमकल रहत जाधरिसमाजक गतिक अनुकूल चलैत नै रहत।

कृष्णदेव- (साँस छोड़ि...) हूँ......।

घनश्याम- अखन जइ काजे बैसलौं तइपर विचार करू। कोनो काज करैक जेहेन इच्छा शक्तिलोकमे रहै छै ओ ओत्ते आगू बढ़िकऽ सकैए। तँ कोनो एहेन समस्या नै छै जेकर समाधान नै भऽ सकैए। सभ कियो आदेश दी तँ.......?

(तीनू गोटे...)

तीनू गोटे- (कृष्णदेव, रघुनाथ आ मनमोहन...) आदेशे-आदेश। खुलिकऽ बाजू।

घनश्याम- रघुनाथ भाय छथि, शहरमे पछड़िरहला अछिमुदा गाम तँ ओइ जगहपर ठाढ़ अछिजइ जगहपर रोगक इलाजक लेल अखनो झाड़-फूक आ टोना-टापर होइए।

रघुनाथ- (मुस्की दैत...) बेस कहलौं।

घनश्याम- एहिना सभ समस्या अछि। जरुरत अछिएक-एक समस्यामे एक-एक आदमीकेँ सटाएब। जखने समस्यासँ आदमी सटत तखने......।

रघुनाथ- ठीके कहै छी घनश्याम। गामक संबंधमे.......?

घनश्याम- भाय, एक तँ ओहिना बाढ़िरौदीक चपेटमे पड़िगाम अधमरू भऽ गेल अछि, तइपर लोकोक किरदानी एहेन रहैए जे औरो गर्तमे ठेल रहल अछि।

कृष्णदेव- ऐठाम चारिये गोटे छी, तँए सबहक (सौंसे गौआँक) बीचमे बैस जे विचार करब ओ ओत्ते अधिक नीक हएत।

पटाक्षेप

एगारहम दृश्य

(नसीवलालक दरबज्जा। कर्मदेव आ नसीवलाल गप-सप्प करैत...)

नसीवलाल- काजक की समाचार अछिबौआ कर्मदेव?

कर्मदेव- तित-मीठ दुनू अछि।

नसीवलाल- (मुस्कुराइत...) तित-मीठ दुनू अछि। बेसी कोन अछि?

कर्मदेव- स्पष्ट कहाँ बूझिपौलौं। जँ स्पष्ट रहैत तँ दुनूकँ मिला कहितौं।

नसीवलाल- ओ मिलबो मोसकिल अछि।

कर्मदेव- ओ केना मिलत?

नसीवलाल- प्रकृतिक अद्भुत खेल अछि। किछु वस्तु एहेन होइए जे अपन सुआद औरो गाढ़ बनबैए। तँ किछु अपन सुआदे बदलिलैत अछि। तितसँ मीठ आ मीठसँ तित भऽ जाइए। किछु एहनो अछिजे ने तिते अछिआ ने मीठे। दुनूक बीच अछि।

कर्मदेव- एहेन पेंचगर स्थितिमे सोझराएब कठिन अछि।

नसीवलाल- एहेन कोन दुख अछिजेकर दबाइ नइए। भलहिं ओ दबाइ बुझैसँ बाहर किअए ने हुअए।

कर्मदेव- तखैन?

नसीवलाल- सभ खेल जिनगीये लेल चलैए। ऐ प्रश्नक उत्तर दू गोटेक बीच नै भेटत। प्रश्नो ओझराएल-ए। एहेन ओझरी लगल अछिजेहन अमती आ तेतरिक सुआद बेराएब।

कर्मदेव- (विहुँसैत...) आगू किकरब?

नसीवलाल- जानकारी (बैसारक) भेलापर किकहलनि?

कर्मदेव- बैसारमे भाग लेबाक आश्वासन तँ सभ देलनि।

(आभा आ शान्तीक प्रवेश...)

नसीवलाल- आभा आ शान्ती तँ आबिये गेलीह। चारिगोटे सेहो भेलौं। कनी पहिने किकनी पाछू ओहो सभ एबे करताह।

कर्मदेव- हुनका सभकेँ बजौने आबी।

नसीवलाल- नै जरूरी अछि। जिनगी दू रस्ते चलैत अछि। एक काजक सबारीसँ दोसक खाली-खाली।

कर्मदेव- की मतलब?

नसीवलाल- काजक सबारी कतबो उभर-खाभर होइत किअए ने चलए मुदा सुरो-सुन्दरीसँ बेसी सोहनगर होइए। जइसँ समैक ठेकाने बिला जाइत अछि।

कर्मदेव- तखैन?

नसीवलाल- एबे करताह। काजक अपन महत होइए। जे महत सभ समान दृष्टिये नै बुझैत छथि। जेकर फल समए पाबिनीकसँ बेसी अधले भऽ जाइए।

आभा- हमहूँ घरपर सँ सोझे कहाँ एलौं। जलखै खा कऽ जे निकललौं से निकलले छी।

कर्मदेव- कतौ बाहर गेल छलौं?

आभा- गामसँ कहाँ बहराएल छलौं। मुदा गामोमे तँ रँग-विरँगक सरोवर, झील, जंगल, पहाड़ अछि। जेकरा पार करैमे किछु अधिक समए, सरपट रास्तासँ, बेसी लगिते अछि।

कर्मदेव- कि मतलब?

आभा- मतलब यएह जे एक तँ ओहिना कुम्मकर्णी नीनमे आधासँ बेसी सुतल अछि। तइपर सँ दुखक दर्द सेहो सुता रहल अछि।

नसीवलाल- ई तँ होइते अछिजे जइ खेतकेँ जोत-कोड़ नै होइ छै ओ रौद-बरसात पाबिपरती बनिजाइए। मुदा पृथ्वी पुत्र ओकरो उपजाउ बनाइये लइए।

कर्मदेव- (मुड़ी डोलबैत...) हूँ-अ-अ।

नसीवलाल- जे जिबटगर अछिओकरा परतिये तोड़ब बेसी नीक लगै छै।

शान्ती- चाचाजी, कनीखान सोचए लगै छी तँ छगुन्तामे पड़िजाइ छी जे हम सभ केहेन स्वतंत्र देशक जिम्मेदार नागरिक छी। जिम्मेदारी की छी आ कतऽ अछि।

नसीवलाल- प्रश्न तँ गंभीर अछि। मुदा बेहद खुशी भऽ रहल अछिजे एहेन प्रश्नपर नजरिजा रहल अछि। धन्यवाद।

शान्ती- (उत्साहित होइत...) चाचाजी जहिना गहबरकँ आँचरसँ पोछिनोरसँ नीप भक्तिनिएकटंगा दऽ शक्तिसँ शक्तिपबैत तहिना मन हुअए लगैए।

नसीवलाल- विचार तँ बहुत पैघ अछि। मुदा ओइले धरतीमे जमिकऽ पएर रोपए पड़त।

शान्ती- किमतलब?

नसीवलाल- मतलबसँ पहिने ई कहू जे जेकर प्रतिनिधित्व (अगुआइ) करै छिऐ ओ कतऽ ठाढ़ अछि?

शान्ती- ठाढ़ तँ कम्मे देखै छी। बेसीकँ तँ जहिना मुइल नढ़ियाकँ कुत्ता लिड़ी-बिड़ी कऽ खाइत अछितहिना समस्या खा रहल अछि।

नसीवलाल- समस्याक रँग-रुप केहेन अछि?

शान्ती- कते कहब।

नसीवलाल- किछुओ जँ बाजब नै तँ आन केना बुझत?

शान्ती- चाचाजी, (माथक घाम पोछैत...) कियो खोपड़ी ले तरसैए तँ कियो ताजमहल ले, कियो दूधक धारमे नहाइए तँ कियो एक घोंट लेल।

(सुकदेव, सोमन आ मनचनक प्रवेश...)

आभा- जहिना मनचन भायकँ पछुआ रोटी भौजी खुअबैत छथिन तहिना गामोक काजमे।

मनचन- (विहुँसैत) भरिदिन अहूँ बाल-बोधकँ सिखबैत हेबै जे खाइमे (भोजमे) आगू आ काजमे पाछू रही।

आभा- से कहाँ सिखबै छिऐ। सिखबै छिऐ जे पहिने करू तखैन खाउ। ककहारामे जहिना डारिपात छुटैत जाइए तहिना।

मनचन- (अधहँसी हँसैत...) भूखे भजन ने होइ गोपाला।

आभा- कठिया लाड़निक कोन काज होइ छै, से तँ......?

मनचन- हँ, से तँ जिनगीमे कते पँचकठिया देखलौं आ आगूओ देखब।

सुकदेव- (दमसैत...) रे बूड़िवाण, सभ दिन एक्के रंग रहमे। उमेरक ठेकान नै छौ।

मनचन- भैया, दुनू हाथ उठा भगवानोकेँ यएह कहै छियनिजे जहिना जिनगी भरिगाए दूधे दैत रहिजाइए, आमक गाछ आमे तहिना हँसते-खेलते दिवस काटिली। की लऽ एलौं आ किलऽ जाएब।

नसीवलाल- अखन जइ काजे सभ एकठाम छी से काज करै जाइ जाउ?

सुकदेव- की बाउ कर्मदेव, जिनका सभ ऐठाम गेल छलौं ओ सभ औता कीनै?

कर्मदेव- कहलनितँ सभ। मुदा.....?

सुकदेव- मुदा की?

कर्मदेव- पढ़ल-लिखल लोकक कोन ठेकान। एक-एकटा बातक सतरह-सतरहटा अर्थ अगर-मगर करैत बुझैत छथि। तँए....?

सुकदेव- तँए की?

कर्मदेव- यएह जे हमरा गप्पक किमाने लगौलनि। से थोड़े बुझै छी।

सुकदेव- गामक-समाजक- प्रतिकिनकर केहेन आकर्षण छन्हि?

कर्मदेव- ओना सबहक उपरा-उपरी छन्हि। मुदा घनश्याम कक्काक किछु विशेष छन्हि।

सुकदेव- औरो गोटेक?

कर्मदेव- सभ अपने बेथे बेथाएल छथि। मुदा घनश्याम कक्काक जेहने बेवहार छन्हितेहने आगू देखैक विचार। असकरो जँ ओ आबिजाथितैयौ बहुत-किछु भऽ सकैए।

नसीवलाल- जँ चौथाइयो बल बाहरसँ भेट जाए तैयौ उठिकऽ ठाढ़ होइमे असान हएत।

मनचन- नसीवलाल भैया, जहिना पानिमे डूमैत चुट्टीकेँ सरलो खढ़ भेटने जान बचै छै तहिना जँ कनियो आस भेटत तैयौ कदमक गाछमे मचकी लगा झूलिलेब। चारियो आनासँ कम भोँट पाओने एमेले-एमपी बनिमुर्गी दकड़ैए आ हम सभ भातो-रोटी नै खा सकै छी।

आभा- अहाँ भोँट दइ छिऐ की नै?

मनचन- किअए ने देबै।

आभा- केकरा दइ छिऐ।

मनचन- जेकरा जीतैत देखै छिऐ तेकरा।

आभा- से पहिने केना बुझै छऐ?

मनचन- हद करै छी। जखन जीतक घोषणा होइ छै तखैन जा कऽ माला पहिरा दइ छिऐ।

आभा- ओ मानिलइए?

मनचन- किअए नै मानत। जे अपने सात घाटक पानिपीबगीरथानिजकाँ बजैए आ पतिवरता कहबैए, ओ किअए ने मानत।

आभा- तब ते अहाँ ठकोसँ नमहर ठक छी।

मनचन- से केना?

आभा- ठक तँ ओ भेल जे निरीह, मुँहदुब्बर, सोझमतियाकेँ ठकैत अछिआ अहाँ तँ ठकक ठक भेलौं।

मनचन- एहिना ने उनटल गंगामे लोक नहा गंगा-स्नानक फल गंगासँ मंगैत छन्हि।

आभा- गंगा दइ छथिन?

मनचन- किअए ने देथिन। भलहिं सुनटाक फल देथिन वा नै,उनटाक फल किअए ने देथिन।

आभा- केना दइ छथिन?

मनचन- साँपक केचुआ देखलिऐहेँ?

आभा- किअए ने देखबै?

मनचन- की ओइ केचुआमे साँपे जकाँ मुँहसँ नांगड़ितक नै रहै छै?

आभा- हँ, से तँ रहै छै।

मनचन- तखैन।

आभा- मुदा?

मनचन- मुदा तुदा किछु नै। अहाँकेँ बुझैमे फेर अछि। देखै छिऐ किने जे गामक सभ कहत जे एकोटा ऑफिसमे बिना घुस नेने काज

नै चलैए।

आभा- हँ से तँ अछिये।

मनचन- मुदा पाइ लऽ लऽ भोँट दइ छिऐ सेहो कहियो।

आभा- यएह बुझैक बात अछि, जखैन भोँटरसँ भोँट लेनिहार धरिघुसेक बेपार करए लगत तखैन जुग बदलतै।

पटाक्षेप

बारहम दृश्य

(गामक विद्यालयक आंगन। बच्चा सभ फील्डपर खेलैत। रस्ता धऽ कऽ राही सभ चलैत। गोल-मोल बैसार। एकठाम कृष्णदेव, मनमोहन आ रघुनाथ बैसल। बगलमे घनश्याम, नसीवलाल, सुकदेव आ गामक लोक बैसल...)

नसीवलाल- (ठाढ़ भऽ...) आजुक बैसार लेल सभकेँ धन्यवाद दइ छियनिजे अपन व्यस्त समैमे आबिगामक बैसारकेँ शोभा बढ़ौलनि। तइ संग होनहार कर्मदेवकेँ औरो बेसी बधाइ दइ छियनिजे जी-तोड़िमेहनत कऽ बैसार करौलनि।

मनचन- भैया, अहाँ कर्मदेवक प्रशंसा बेसी केलियनि।

नसीवलाल- कम्मे केलियनि। नवयुवक आ बाल-बच्चाक (बेटा-बेटीक) बेसी प्रशंसा कतौ-कतौ अधलो होइ छै।

कृष्णदेव- (चौंकैत...) से केना?

नसीवलाल- मनुखकेँ घरसँ बाहर धरिप्रशंसा-निन्दासँ परहेज करक चाही।

कृष्णदेव- तखैन?

नसीवलाल- उचित सीमाक उल्लंघन होइते बनै-विगड़ैक संभावना बढ़िजाइत अछि।

घनश्याम- (मुड़ी डोलबैत...) संभव अछि।

नसीवलाल- संभव रहितो कठिन (भारी) अछि। मुदा जाधरिसंभव नै हएत ताधरिसमाजक गाड़ियो लीख दऽ ससरब कठिन अछि।

घनश्याम- नीक-अधलाक विचार तँ करैके चाही।

नसीवलाल- निश्चित करबाक चाही। मुदा हटिकऽ नै सटिकऽ।

घनश्याम- की मतलब?

नसीवलाल- मतलब यएह जे जहिना समुद्रक किनछरिक पानिकम गहींरमे रहितो अगम पानिसँ मिलल रहैत, तहिना।

(कनडेरिये आँखिये रघुनाथ, मनमोहन नसीवलाल दिस देखैत तँ

मनचन, सुकदेव कृष्णदेव दिस। अपन-अपन मनोनुकूल मुँहक रुप सेहो बनबैत...)

घनश्याम- (ठहाका मारि...) अखन धरिगामक बैसार कोन रूपे चलैत अछिनसीवलाल भाय?

नसीवलाल- घनश्याम बाबू, जहिना बन्दूकक अनेको गोली खेनिहारकेँ देहक कोनो अंग चिन्हार नै रहैत तहिना गामो-समाजकेँ भऽ गेल।

घनश्याम- कनी फरिछा कऽ कहियौ?

नसीवलाल- ओना अखन जइ काजे सभ एकठाम बैसलौं पहिने से काज हेबाक चाही। मुदा ऐ तरहक बैसार पहिल-पहिल अछितँए किछु आनो बात चलबे करत।

मनचन- भैया, हनुमानजी जकाँ कियो छाती फाड़िदेखबैए आकिपेटक बात आ हाथक काजेसँ देखबैए।

(मनचनक बात सुनिकृष्णदेव हंसक हिलुसैत आँखिजकाँ देखि...)

कृष्णदेव- अखन धरिमनचनकेँ बटेदार बुझै छलौं मुदा से नै ओ समाजक पटेदार (हिस्सेदार) छी।

(कृष्णदेवक विचार सुनि...)

नसीवलाल- जहिना हाथमे पाँचो-आंगुर पाँच लम्बाइ-चौड़ाइक होइ छैक मुदा हाथक शोभा तँ बराबरे बढ़बैत छै किने?

कृष्णदेव- हँ से तँ बढ़ैबते छै।

नसीवलाल- तहिना ने सड़क बनौनिहारमे पत्थर बैसौनिहारसँ लऽ कऽ नक्शा बनौनिहार धरिक होइ छै।

कृष्णदेव- मुदा?

नसीवलाल- हँ। जहिना सिर क्षीणका भगवतीक महत होइत तहिना ने मुस्कुराइत खर्गधारी भगवतियोक होइत।

(बिच्चेमे...)

घनश्याम- हँ हेबाक चाही। मुदा पहिने दुनूक परिचए हएब जरूरी।

नसीवलाल- निश्चित। जहिना भूतपर भविष्य ठाढ़ होइत तहिना ने मनुष्योक

पैछला जिनगी अगिला जिनगीकेँ ठाढ़ करैमे मदतिगार होइत।

मनचन- जँ से नै हुअए, तखैन?

नसीवलाल- ओहिना हएत जहिना सत्यवादी हरिश्चन्द्रक पार्ट (स्टेजपर) कियो शराबी झुमिझुमिकठही चौकीपर अलापति।

(ठहाका...)

घनश्याम- हँसी-मजाक छोड़िबैसारक गरिमा बनाउ?

नसीवलाल- (अधहँसी हँसि...) बहुत नीक विचार घनश्यामबाबू, देलनि। आइ धरिहृदए तड़पतिरहल जे गामोक नक्शा इतिहासक पन्नामे जोड़ाए। से......?

मनचन- भैया, जइ समाजमे प्रोफेसर, इन्जिनियर, डॉक्टर, बैंक मैनेजर लऽ कऽ गोबर बीछिनिहारिधरिछथितइ समाजक इतिहारस नै बनै ओ लाजिमी छी।

नसीवलाल- कहलह तँ ठीके मुदा.....।

मनचन- मुदा की?

नसीवलाल- यएह जे, ओना आइ धरिक समाजक पन्ना-पन्ना पढ़ए पड़त। ओकरा तकैमे किछु मेहनत उठबए पड़त। मुदा जँ ओकरा विचारणीय प्रश्न बना रखिआजुक समाजक अध्ययन कऽ निर्माणक संकल्प लेल जाए, तहूसँ काज चलिसकैए।

मनचन- से केना हएत?

घनश्याम- जँ करैक इच्छाशक्तिजगा संकल्पबद्ध भऽ डेग उठाबी तँ भऽ सकैए।

कर्मदेव- घनश्याम काका, अहाँ तँ नारदजी जकाँ छोटका बैंकक मीटिंगसँ लऽ कऽ बड़का बैंकक मीटिंग धरिक अनुभव रखने छी तँए नीक हएत जे अपने समाजक एकटा रुप-रेखा बना बजियौ?

घनश्याम- बाउ कर्मदेव, कहलह तँ ठीके बाहरी दुनियाँसँ भिन्न ग्रामीण दुनियाँ अछि। तँए जे तरी-घटी गामक नसीवलाल भाय जनैत-बुझैत- छथिसे नै बुझै छी।

सुकदेव- ई कोनो बड़ पैघ समस्या नै छी। नीक हएत जे दुनू गोरे

विचारिकऽ आगूक डेग उठाबी।

(सुकदेवक विचारकेँ मनमोहन आ रघुनाथ समर्थन केलनि। मुदा कृष्णदेव मुँहक बात रोकिलेलनि...)

मनचन- (मुस्की दैत...) घनश्याम भाइक तेहेन पटपेटा पेट छन्हिजे नसीवलाल भैयाकेँ पीचिये देथिन।

घनश्याम- (हँसैत...) नै मनचन, मोटेलहा पेट रहैत तखैन ने फुललाहा छी। कोढ़िलोसँ हल्लुक।

मनचन- गणेशजी बला। जे एक-रत्तीक मुसरी मुनहर सन पेटकेँ उठा दौड़ैत रहैए।

घनश्याम- हँ। हँ। सएह बुझहक।

कृष्णदेव- (रूष्ट भऽ...) समैक उपयोग करू।

घनश्याम- भाय, विचार अछिजे सभ कियो दिलसँ अपन-अपन जिनगीक अनुभव व्यक्त करी। जइसँ एक नव समाज बनैक सुदृढ़ नीब पड़त।

कृष्णदेव- बहुत बढ़ियाँ, बहुत बढ़ियाँ। जाधरिगामक दशाक सम्यक चर्च नै हएत ताधरिदिशा निर्धारित करैमे किछु कमी रहबे करत।

नसीवलाल- बहुत बढ़ियाँ विचार कृष्णदेवबाबूक छन्हि। जाधरिपेटक नीकसँ अधला धरिक विचार समाजक बीच नै राखब ताधरिसमाजक अंतरी मिलान केना हएत?

मनचन- भैया, अंतरी मिलान केकरा कहै छै?

घनश्याम- (मुस्की दैत...) छाती मिलानकेँ।

मनचन- छाती मिलान......। छाती मिलान तँ दुइये ठाम......। समैधिक संग आ दुनू परानी.......। दू परानी.......?

घनश्याम- कोन मंत्र पढ़ए लगलह मनचन?

मनचन- व्यासजी आ गनेसजीमे यएह ने शर्त्त रहनिजे बिनु बुझने कलम नै बढ़ावी।

घनश्याम- अहाँ तँ शास्त्रो बुझै छी मनचन।

मनचन- पढ़िकऽ नै, भागवत सुनिकऽ। तेसरा तक अपनो गामक ब्रह्मस्थानमे साले-साल भागवत होइ छलै किने।

नसीवलाल- अखन धरिबैसारक मूल विषयपर नै एलौंहें। अढ़ाइ-तीन घंटा बीत गेल। ओना, भलहिं हम सभ विषयानतरे गप-सप्प किअए ने केलौं मुदा बेबुनियाद बात तँ नै भेल।

घनश्याम- आन काजसँ भिन्न बौद्धिक काज होइए। हाथ-पएरक काज जकाँ लगातार केने काज छुटैक संभावना बढ़िजाइत अछि। तँए......?

मनचन- घनश्याम भाइक विचारकेँ समर्थन करै छी।

नसीवलाल- बीचमे टिफीनक आवश्यकता तँ जरूर होइत अछि।

सुकदेव- पशुपतिनाथक दर्शन आ किछु बनिज हएब, जहिना दोबर लाभ दैत अछितहिना बाल-भोग भेलासँ हएत।

मनचन- बेस कहलिये भैया। अखन धरिजे हम सभ समाजमे टौहकी संग पहटोमे फँसल छी, तेकरो.......?

घनश्याम- मनचनक दृष्टिकूट नै बुझलौं?

नसीवलाल- दोसराक व्याख्यासँ नीक मनचनेक व्याख्या हएत।

मनचन- से किअए भैया?

नसीवलाल- हौ मनचन, जमीन-जाल, शब्द-जाल आ वाक्-जालमे सभ ओझराएल छी। तोहर आत्मा किबाजिरहल छह से तोंहीटा बुझै छहक। वाणी होइत जे निकलतह वएह बात तोहर भेलह।

मनचन- भैया, आत्मो बोली तँ दुबटिया (बुइधिक मोड़) पर हरा जाइत अछि। एक्के विचारकेँ आमक गाछ जकाँ डारिछिटकिजाइ छै।

सुकदेव- मनचन, गप्पक छिलनिछोड़ह?

मनचन- भैया, जाबे गप्पक छिलनिनै करब ताबे शीशो जकाँ सुरेब केना हएत। खाएर, जहिना औझका बैसार ऐतिहासिक भऽ रहल अछितहिना जे पनपिआइ करब तइमे सभ मिलिबना, परोसिसभ मिलिखाए।

घनश्याम- मनचन, जे कहलक ओ आब नै छै। सभठाम चलै छै।

मनचन- आँखिक सोझमे जाइतिक आ दू सम्प्रदायक बीच खानो-पान आ

प्रेमसँ वियाहो होइत देखै छी। मुदा सर्वसम्मतिसँ किअए ने घोषणा कऽ दइ छै। जखन किधरतीसँ अकास धरिउड़िआइत अछि।

पटाक्षेप।

तेरहम दृश्य

(दोसर बैसार...)

घनश्याम- मनचन, बरी बड़ सुन्दर बनल छेलह। नून देनिहारकेँ चाबसी दइ छियनि।

मनचन- हमरा रिझबै छी। दू सालसँ सभ नोनगर भोज विन्यासमे हमहीं नोन दइ छी।

घनश्याम- किअए?

मनचन- गाममे बारह आना लोक रोगिये-टट्टी अछि। कियो नून बाड़ने अछितँ कियो अधे खाइए। भोज तँ सामुहिक छी। एकठाम बैस खाएब।

घनश्याम- दोसरो चाबसी दइ छी मनचन।

मनचन- से किअए?

घनश्याम- अखन धरिहमहूँ नै गौर केने छलौं जे अहाँ केने छी।

मनचन- भाय, अहाँक सोझमे बजैत संकोच होइए। मुदा अपना घरमे लोक नीकसँ नीक आ अधलाहसँ अधलाह बजैत अछितँए........?

घनश्याम- चुप किअए भेलौं? आइ धरिजे आनन्द जिनगीमे नै भेटल छल ओ भेट रहल अछि।

मनचन- केना?

घनश्याम- अपनासँ अगिला लग जी हुजुरी करए पड़ैए आ पैछलाकेँ जी-हुजुरी करबै छिऐ। जिनगीक कोनो आड़िये-धूर नै अछि।

सुकदेव- मनचन, मुँह बन्न करह। बैसारक महत होइत अछि। दोसरो गोटेकेँ अवसर दहुन?

आभा- एक तँ उमेरे कते भेल हेन। मुदा जतबे अछितइमे आइ जत्ते समाजक बीच आएल ओत्ते....... ।

नसीवलाल- कोनो गलत किसही परम्परा ओतबे दिन चलैत अछिजत्ते दिन लोक चलबैत अछि। ऐ दिस विवेकीकेँ जरूर नजरिदेबाक चाहियनि।

आभा- किनजरि?

नसीवलाल- यएह जे पाछूसँ अबैत बेवहार आजुक समैमे अनुकूल अछिवा नै। विवेकी मनुख होइक नाते सबहक दायित्व बनै छन्हिजे सनातनी बेवहार अछिओ जीवित रहए।

आभा- सनातनी बेवहार की?

नसीवलाल- परिवर्तनशील बेवहार।

शान्ती- काका, गलत बेवहार समाजमे पैसल केना?

नसीवलाल- ने एक बेर पैसल आ ने एकदिन पैसल। घुसकुनिया-ओंघरनिया दैत पैस अंकुरित भऽ विशाल वृक्षक रुपमे बदलिगेल। जइसँ लोक, परलोकक संग विश्वक नक्शे बदलिगेल।

शान्ती- डॉक्टरकाका, अपने किछु......?

रघुनाथ- देखियौ, जहिना रामायणमे तुलसी कहने छथिहरिअनन्त हरिकथा अनंता' तहिना अछि। ओना, दुनियाँक सभ मनुखकेँ किछु आवश्यकता आ गुन एक तरहक अछि, मुदा.....?

शान्ती- मुदा की?

रघुनाथ- यएह जे किछु एहनो अछिजे सभकेँ फुटो-फुट-अलगो-अलग-होइत। ओना हमहूँ एक भगुए भऽ गेल छी। समाज अध्ययन तँ विशाल अध्ययन छी, तँए......। कृष्णदेवबाबू आ मनमोहनबाबू बुझा सकै छथि।

मनमोहन- भाय, जहिना अहाँ रोग आ रोगीक बीच रहलौं तहिना छी। मुदा मनक बात छिपाइयो कऽ राखब उचिन नै बुझै छी।

सुकदेव- हृदेक बात इंजिनियर सहाएब बजलाह।

मनमोहन- जेना-जेना समए बीत रहल अछितेना-तना लोकोक जिनगी बदलिरहल अछि। पहिलुका लोक सोलहो आना शरीरसँ श्रम कऽ शरीरक रक्षा करैत छलाह।

सोमन- जेना आइ देखै छिऐ तेना नै छलै?

मनमोहन- नै।

सोमन- (किछु शंका करैत...) इंजीनियर सहाएब, कते दिन भेल से तँ नीक जकाँ मन नै अछि। मुदा एहिना एक बेर रौदी भेल से मन

अछि। जहाँ-तहाँ लोक कमाइ-खटाइले लोक भागल। हमहूँ भोलबाकक्का सेने कलकत्ता गेलौं।

आभा- कलकत्ता गेल छी?

सोमन- गेले नै छी दू साल ठेलो चलौने छी। जइसँ सभ गली-कुच्ची देखल अछि।

आभा- केना ठेला चलबै छेलिऐ?

सोमन- छातीमे ठेलाक अगिला भाग अड़ा दुनू हाथसँ दुनू भागक डंटा पकड़िठेलै छलौं।

आभा- इंजीनिगाड़ी सभ नै छलै?

सोमन- छलै। जीपे-कारक कोन बात जे बड़का-बड़का कोठा, करखन्ना, दोकान सभ छलै। जेहेन ओइठीनक दोग-सान्हिक सड़क अछितेहन तँ अपना सभ दिस अछियो नै।

घनश्याम- बात दोसर दिस बढ़ल जाइए।

मनमोहन- बड़बढ़िया घनश्याम भाय कहलनि। एक तँ दैवी प्रकोप-बाढ़ि, रौदी-सँ अपन इलाका पछुआएल दोसर मनुक्खोक दोख कम नै छै। जे इलाका जत्ते पहिने जागल ओ ओत्ते अगुआएल।

आभा- कनी सोझरा दियौ कक्का?

मनमोहन- (मुस्की दैत...) पहिने जंगली अवस्थामे अपना सबहक पूर्वज रहै छलाह। हाथे-पएरसँ सभ किछु करै छलाह। जेना-जेना बुइधअकील बढ़ैत गेल तेना-तेना आगू मुँहेँ ससरैत गेलाह। हथकरघासँ पाँच सीढ़ी आगू बढ़िकम्प्यूटर युगमे पहुँचिगेल छी।

आभा- ऐसँ आगूओ बढ़त?

मनमोहन- निश्चित बढ़त। निचेनमे कहियो औरो कहब। अखन जइ काजे एकत्रित भेल छी तेकरा आगू बढ़ाउ।

सोमन- भाय, हम सभ ने कहियो काल मासुल दऽ कऽ बस, जीपपर चढ़ै छी। अहाँकेँ तँ अपने अछि।

मनमोहन- से तँ अछिये।

घनश्याम- ओना बाढ़िरौदी दुनू जनमारा छी। मुदा आइ रौदीक विचार करू।

शान्ती- मैनेजर काका, अहाँ सभ तरहे ऊपर छी। ओना समाजक किछु भार ऊपरमे अछि। तँए चाहब जे झगड़ा-झंझटसँ नै विचारक रास्तासँ समाज आगू बढ़ए।

घनश्याम- विचार तँ अपनो सएह अछि। मुदा नहियो चाहलापर कते-गोटेकेँ बैंकक लोनमे जहल पठबए पड़ैए आ चौकठिकेबाड़ उखाड़ए पड़ैए।

शान्ती- से किअए?

घनश्याम- (विस्मित होइत...) किकहब बोरिंग-दमकल, गाए पोसैक लोन उठा सराध-वियाहक भोज कऽ पूँजी नष्ट कऽ लैत अछि। समैपर आपस नै करैत।

शान्ती- तखैन?

घनश्याम- औझुका बैसार तँए ऐतिहासिक अछिजे समाज अपन कल्याणक दिशा निश्चित करथि।

नसीवलाल- जुग-जुगान्तरसँ जे मनोवृत्तिबनिगेल अछिओकरा एकाएक नै बदलल जा सकैए। मुदा बिना बदलने काजो नै चलत। तँए जरूरी अछिजे उत्पादन आ उपभोगकेँ नीक जकाँ सभ बुझी।

घनश्याम- जुगक अनुकूल विचार अछि।

सुकदेव- घनश्यामबाबू, गामक बारह आना जमीन हुनका सबहक छियनिजे गाम छोड़िअनतए जा नोकरी करै छथि। जखन किखेती केनिहारकेँ अपन खेत नै छियनि।

घनश्याम- (मुड़ी डोलबैत...) हँ से तँ अछिये।

सुकदेव- तइ बीच केना सामंजस्य हएत?

घनश्याम- ओना अपना सभ बुझै छी जे अंग्रेजकेँ भगा हम सभ स्वतंत्र भेलौं मुदा से नै छी। जखन शासन आ सम्पति(देशक) सबहक सझिया भए जिनगीक समुचित विकास दिस बढ़त तखैन हएत।

रघुनाथ- (हृदए खोलि...) मन हल्लुक करै दुआरे अपन बात कहै छी। जहिना जुआनीक उमकीमे गाम छोड़िशहर गेलौं तहिना आइ बूझिपड़ैए जे......?

मनमोहन- रुकलौं किअए?

रघुनाथ- संकोच होइए। जइठीम छी तइठीम निहत्था भऽ गेलौं। जिनगीक सभ किछु छीना रहल अछि। मुदा गाममे सभ किछु देखिरहल छी।

मनमोहन- संकोच किअए होइए।

रघुनाथ- पूँजी नष्ट होइत देखिरहल छी। जइले जिनगी गमेलौं सएह.......?

मनमोहन- डॉक्टर सहाएबसँ कनियो नीक नै छी। ओना डॉक्टर सहाएबकेँ सभकिछु भेट जेतनिमुदा......?

रघुनाथ- (मुस्की दैत...) मुदा की?

मनमोहन- एग्रीकल्चर शिक्षा पाबिबेटा गाममे रहत आ अपने शहरमे। बुढ़ाड़ीमे एकलोटा पोनियो के देत।

सोमन- अहाँक गाम छी। खेत-पथार छी। अहाँक सुआगत अछिजे गाम आबिअपन जिनगीक अनुभव अनाड़ी-धुनाड़ीकेँ दिऐक।

कृष्णदेव- अखन हम तनावमे चलिरहल छी। मुदा तैयो कहै छी अहाँ सबहक विचारानुसार जीवैक कोशिश करब।

शान्ती- घनश्यामकाका, आगूक भार अहाँ ऊपर?

घनश्याम- गामक भाग जगिगेल। पूँजीक जत्ते जरुरत हएत ओ बैंकसँ दिआ देब। भने एग्रीकल्चर ग्रेजुएट गाममे रहताह, हुनका माध्यमसँ गामक योजना बना उन्नतिखेती आ खेतीसँ जुड़ल कल-कारखानाक लेल प्रयासरत रहब।

शान्ती- (हँसैत...) जिनगीक सार्थकता पाबिरहल छी।

घनश्याम- किछु करैक संकल्प सभ लिअ। जखने सामुहिक डेग उठत तखने रस्ता धड़ैमे देरी नै लागत।

नसीवलाल- सबहक दुख-सुख- सहबहक छी।सबहक इज्जत-सबहक छी।

पटाक्षेप

समाप्त।